पंथी नहीं जैनी बनो

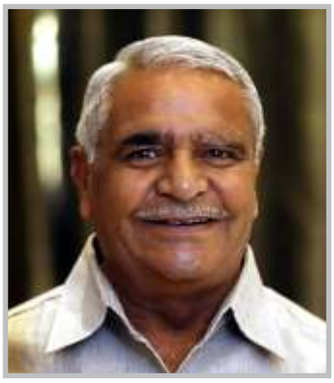

जैन समाज का शाश्वत् पर्व पर्वाधिराज पर्यूषण (दशलक्षण) पर्व 28.08.25 से 06.09.25 आ रहा है। यह पर्व धार्मिक दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है ही सामाजिक संगठन एवं एकता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि हमारी जैन समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा है जो केवल इन्हीं दिनों सामाजिक कार्यों में सक्रिय होता है या मन्दिर आता है। हमारे समाज का हर सदस्य वह चाहे कितना भी व्यस्त क्यों न हो इन दिनों मन्दिर जाने का जरूर प्रयास करता है एवं अधिकांश सफल भी होते हैं। यही कारण है कि इन 10 दिनों में हमारा प्रत्येक मन्दिर छोटा या बड़ा पूरा भरा होता है बल्कि जगह कम पड़ जाती है। विभिन्न आचार्यों / मुनियों एवं आर्यिका माताओं के सान्निध्य में होने वाले संरकार शिविरों में भी काफी भीड़ होती है। इस प्रशस्त वातावरण में आप सबसे कुछ चर्चा करना चाहता हूँ।

समाज की शक्ति प्राप्त करके ही भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने अब तक श्री सम्मेद शिखर जी, श्री गिरनारजी आदि के मामले में दिगम्बर जैन समाज के हितों की रक्षा की है। नांदनी (महाराष्ट्र) के मठ से ले जायी गई माधुरी (हथिनी) को वापस लाने हेतु सभी स्तर पर प्रयास किये गये है। अनेक पूज्य आचार्यगण तथा गणाचार्य श्री कुन्थुसागर जी, पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी, आचार्य श्री देवनन्दि जी, आचार्य श्री गुणधरनन्दिजी एवं अनेक पूज्य भट्टारक स्वामी जी ने इस विषय में अपना मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। फलतः समाज की संगठित शक्ति के सम्मुख वनतारा प्रबन्धन को झुकना पड़ा एवं उन्होंने उसे वापस मठ भेजने पर सहमति जताई है। उनके प्रतिनिधियों ने मठ में आकर शीघ्र वापस भेजने का आश्वासन दिया है। आशा है कि वह शीघ्र वापस आयेगी। तिर्यंच होकर भी माधुरी ने जिनधर्म एवं पूज्य मुनिराजों के प्रति जो भक्ति प्रदर्शित की वह श्लाघनीय है। हम समाज के सभी वर्गों एवं कोल्हापुर अंचल के सभी जैन / जैनेतर बंधुओं के प्रति एतदर्थ धन्यवाद ज्ञापित करते है एवं आशा करते है कि भविष्य में भी एकजुटता एवं जागरूकता का परिचय देंगे जिससे जैन संस्कृति पर कोई कुठाराघात न हो।

यदि हम संगठित एवं सक्रिय रहेंगे तो गिरनार जी की समस्या का भी समाधान निकलेगा।तीर्थों को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को दृष्टिगत कर हमने क्रमिक रूप से देश के सभी तीर्थों पर सोलर पैनल लगाने का निर्णय किया है। इस क्रम में मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र एवं कुछ अन्य तीर्थों के प्रबन्धकों को सुझाव है कि वे अपनी आंचलिक समितियों के माध्यम से भा. दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सम्पर्क में रहे।

मैं समाज के युवाओं को विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि पर्व के दिनों में मन्दिर जाने के साथ ही पूज्य संतों से भी सम्पर्क बनायें, उनका आशीर्वाद एवं प्रेरणा प्राप्त कर अपनी जीवन शैली में आवश्यक परिवर्तन करें क्योंकि जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान जीवन शैली (Life style) में परिवर्तन से संभव है। मेरा संतों से भी विनम्र निवेदन है कि वे आगामी पर्व के दिनों में अपने प्रवचनों को अधिक दार्शनिक बनाकर युवाओं की जरूरतों/ समस्याओं पर केन्द्रित करें, उनके समाधान को बतायें, इससे वे जुड़ेंगे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्मकाण्डों में नहीं उलझती, पूजा पद्धति कुछ भी हो, उपसना भ. जिनेन्द्र देव की ही होती है। अतः मेरा युवाओं, भाई बहनों से आग्रह है कि पंथ कोई भी हो इससे फर्क नहीं पड़ता फर्क केवल आपकी भक्ति से पड़ता है अतः आप सभी पंथों के अनुयायी न बन कर जिनधर्म के अनुयायी बनें। मार्ग कोई भी अपनायें लक्ष्य एक ही है अतः अपने कर्तव्य का निर्वाह करें। पंथी नहीं जैनी बनें। जैनत्व में ही आपकी शान है, मन की शांति है एवं भविष्य की सुरक्षा है। पर्युषण पर्व की अग्रिम शुभकामनाओं सहित।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

तन एवं मन के साथ-साथ, आत्म शुद्धि का अवसर- दसलक्षण महापर्व

बंधुओ भगनियों,

सादर जय-जिनेन्द्र !

जैन संस्कृति में पर्युषण महापर्व का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। हम कह सकते हैं कि मोक्षमार्ग स्वरूपी शुद्ध आचरण कराने वाले हैं ये दश धर्म! इसी कारण सदियों से हम दशलक्षण पर्व को बड़े ही उत्साह और भक्तिभाव से धर्म व्रत, आराधन करते हुए प्रत्येक वर्ष मनाते आ रहे हैं। पर्युषण के इन दस दिनों में भारत के प्रत्येक जैन मंदिर में भक्ति और धर्म का वातावरण बना रहता है, देव-शास्त्र-गुरु की पूजा उपसना एवं उनकी आराधना कर प्रत्येक धर्मार्थी अपने पुण्य का संचय करता है और प्रत्येक श्रद्धालु इन दश दिनों में मंदिर जाकर देव दर्शन अवश्य ही करता है तथा अधिकांश धर्मार्थी अपनी-अपनी शक्ति अनुसार व्रत-उपवास संयम, तप आदि कर अपनी आत्मा को पवित्र बनाते हैं, वास्तव में उत्तम क्षमादि यह दसधर्म हमें दस दिनों में अपने जीवन को सुधारने एवं आत्म शुद्धि करने का अवसर प्रदान कराते हैं।

मेरी मंगलकामनाएं हैं कि इस पर्युषण की पावन बेला में सभी त्यागी, व्रती जो उपवास, एकासन द्वारा तप कर रहे हैं ऐसे सभी तपस्वियों को अपने-अपने व्रतादि में शक्ति व संयम बल मिलें, साथ ही उनके इस असीम पुण्य की बारम्बार अनुमोदना !

अभी गत दिनों हमने बड़े ही भक्ति भाव से भगवान पार्श्वनाथ जी निर्वाण महोत्सव मनाया, चूंकि भगवान पार्श्वनाथ भगवान की निर्वाण स्थली शास्वत सिद्ध भूमि श्री सम्मेदशिखर जी में निर्वाण महोत्सव भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वाधान में ही मनाया जाता है जो इस वर्ष भी मनाया गया, हमें प्रसन्नता है कि पूज्य मुनि, आर्यिका माताजी, महाराजों के मंगल सानिध्य में मोक्ष सप्तमी के पावन अवसर पर श्री सम्मेदशिखर जी में भगवान पार्श्वनाथ जी का निर्वाण लाडू बड़े ही भक्ति के साथ और शांत वातावरण में चढ़ाया गया, इस दिन काफी मात्रा में भी जैन श्रृद्धालु देश-विदेश से शिखरजी पहुंचें थे, पधारने वाले सभी यात्रियों की समुचित व्यवस्थाएं की गयी थी, शासन-प्रशासन से हमें भरपूर्ण सहयोग मिला ! इसके अतिरिक्त अनेकों श्रद्धालुओं ने टीवी चैनलों के माध्यम से सीधा प्रसारण देखकर अपने पुण्य का संचय किया। मैं इस कार्यक्रम को सफल बनाने वाले कमेटी के पदाधिकारियों, अंचलीय पदाधिकारी, सरकारी अधिकारीयों, पुलिस प्रशासन, पत्रकारों एवं महीनों से तैयारियों में जुटे प्रत्येक सहयोगी कार्यसेवक को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण-संवर्धन में कार्यरत दिगम्बर जैन समाज की एकमेव प्रतिनिधि संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने १२५ वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही हैं, इसी उपलक्ष्य में हम सभी तीर्थक्षेत्र कमेटी का १२५ वां स्थापना वर्ष मनाने जा रहे हैं, आपको बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के १२५ वें स्थापना वर्ष के सुअवसर पर गत दिनांक ३० जुलाई को शास्वत भूमि श्री सम्मेदशिखरजी में विराजमान पूज्य मुनि-आर्यिका जी के आशीर्वाद से तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में तीर्थक्षेत्र कमेटी के "बहुउद्देश्ययीय भवन" का शिलान्यास संपन्न हुआ है। इस भवन निर्माण से शिखरजी में आने वाले यात्रियों को आवास भोजन आदि की समुचित व्यवस्थाएं मिल सकेगीं, हमारा आपसे निवेदन है कि आप भी इस भवन निर्माण में सहयोगी बनकर तीर्थक्षेत्र कमेटी के इस एतिहासिक कार्य में अपना योगदान देकर पुण्य का संचय करें।

पुनश्च पर्युषण महापर्व हम सभी को मंगलदायी होवे, हमारे भावों में शुद्धता आये, और सभी जीवों के प्रति क्षमा, करुणा और दया भाव को प्रसारित करें, ऐसी मंगल भावना के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

एक मौका मिला है स्वयं को सम्हालने का

कहने को तो साल में 3 बार पर्यूषण पर्व आते है और यह हकीकत भी है किन्तु 90% जैन बन्धु केवल एक पर्यूषण पर्व को जानते है जो भाद्रपद शुक्ल पंचमीं से अनन्त चतुर्दषी तक 10 दिन चलता है इसीलिए दषलक्षण पर्व कहलाता है। यह अनादि निधन शाष्वत पर्व है जो इस वर्ष 28 अगस्त से 6 सितम्बर तक चलेगा।

वर्षाकाल में अनेक नगरों/तीर्थों/कालोनियों में पूज्य संतों के वर्षायोग हो रहे होंगे। हमारे इन्दौर नगर में ही 18 स्थानों पर वर्षायोग हो रहे हैं वह भी लगभग 90-95 पिच्छीधारी संतों के। सम्पूर्ण देश में लगभग 1600-1700 पिच्छीधारी संत वर्षायोग में साधनारत है। वर्षायोग की पूर्ण सूची मासान्त तक प्राप्त होने पर सही संख्या प्राप्त होगी। जहॉ वर्षायोग नहीं हो रहे हैं वहां पर भी इन दिनों विद्वान, ब्रह्मचारी भाई-बहन, स्वाध्यायीजन सभी धार्मिक क्रियाओं को नेतृत्व प्रदान करते हैं। चूँकि इन दिनों जैन समाज के समस्त आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष मन्दिर जी जाते हैं। यम-नियम धारण करते हैं। देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हैं अतः यह एक अवसर होता है कि हम संवाद स्थापित कर उनके जीवन की दशा एवं दिशा सुधारे। अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं मिलता यह कहावत है। अतः यदि हमें वाकई तनावमुक्त सुखी जीवन जीने की तमन्ना है तो शुरुआत स्वयं से करनी होगी। हमें दोस्तों की नकल करने के बजाय शुरूआत अपने घर-समाज से करनी होगी। मैं मानता हूं कि जमाना बदल चुका है, जरूरतें बदल गई है, किन्तु शरीर वैसा ही है, सच्चा सुख पाने के रास्ते भी वही हैं। होटल, मॉल, देर रात तक पार्टी ने क्षणिक सन्तोश भले ही मिलता हो किन्तु इसने हमें बुरा स्वास्थ्य, तनाव, प्रतिस्पर्द्धा एवं अनैतिक अघः पतन ही दिया है। हम नशे के शिकार हो चुके हैं या होने वाले हैं। देर रात तक जागना एवं सुबह 9.00 बजे तक सोकर उठना भारतीय जीवन शैली के अनुकूल कदापि नहीं हैं। इन 10 दिनों में सुबह उठकर स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर प्रातः 7.00 बजे मन्दिर जाने से आप देखेंगे पूरा दिन कितना सुखद एवं व्यस्थित रहता है। सायंकाल में भी फूहड़ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बजाय ज्ञानवर्द्धक परिचर्चाओं, भाषण, वाद-विवाद, प्रश्नमंच, भजन संध्या आदि करें। तम्बोला खेलने एवं खिलाने वालों की मानसिकता क्या है? जरा विचारे।

इसकी तैयारियों ने एक बड़ा नुकसान किया है। शास्त्र सभाओं के समय को हड़पना। एक जमाना था जब शास्त्र सभाऐं

पर्यूषण पर्व के दैनिक कार्यक्रमों का एक अनिवार्य अंग हुआ करती थी। सभी वृद्ध, स्त्री-पुरुष बड़ी श्रद्धा एवं विनयपूर्वक शास्त्र सभाओं में सम्मिलित होते थे। अब केवल चंद बुजुर्ग स्त्री-पुरूष ही शास्त्र सभाओं में बैठते हैं। युवा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी में लगे रहते हैं। सभा के पहले आरती जोर-शोर से होती है। इसमें भी समय का अतिक्रमण होता है। शास्त्र प्रवचन का 15-20 मिनट का टाईम आरती में चला जाता है। बाद में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजक चाहते है कि पंडित जी थोड़ा जल्दी खत्म कर दें जिससे शास्त्र सभा को मात्र 30-40 मिनट बमुश्किल से मिलते है। समाज से आग्रह है कि शास्त्र सभा को पूरा 1 घंटा दिया जाये। यदि आरती 15 मिनट देर तक चले तो सांस्कृतिक कार्यक्रम भी 15 मिनट देर से शुरू हो। किन्तु शास्त्र सभा को पूरा 1 घंटा दिया ही जाना चाहिए।

शास्त्र सभा करने वाले विद्वान/ब्रह्मचारी भाई-बहनों से भी आग्रह है किः -

1) शास्त्र सभा का प्रारम्भ निर्धारित मंगलाचरण से ही करना चाहिए। अर्थात ओंकार बिन्दु संयुक्त .....वाला मंगलाचरण करना चाहिए जिससे श्रोताओं को परम्परा का बोध हो।

2) शास्त्र की गादी पर सदैव पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथ ही विराजमान करना चाहिए। भले ही आपकी श्रद्धा किसी आचार्य/मुनि/आर्यिका के प्रति हो तथापि आप जिनवाणी के रूप में पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथ ही विराजमान करे। सभा में मौजूद युवा जो केवल 10-15 दिन ही मन्दिर जाते है उनको जटिल दार्शनिक विषय नहीं समझायें जा सकते। प्रथमानुयोग के पूर्वभवों की कहानियॉ श्रद्धा बढ़ाने हेतु अच्छी है, रोचक भी है, उनका उपयोग दस लक्षणों के महत्त्व को समझाने में करना चाहिए। करणानुयोग के भूगोल के विषय पर युवा पीढ़ी को जरा विश्वास कम होता है। गणित का विषय तो जटिल होता है। द्रव्यानुयोग महत्त्वपूर्ण है लेकिन तब जब श्रद्धान स्थिर हो चुका हो, व्यक्ति पापों से विमुख हो। अब बचा चरणानुयोग तो मेरे विचार से श्रावकाचारों की चर्चा एवं उपयोगी जीवन शैली के बारे में बताना अधिक महत्त्वपूर्ण है। आचार्य समंतभद्र प्रणीत रत्नकरंड श्रावकाचार एवं उस पर लिखी पं सदामुखलाल जी की टीका बहुत

उपर्युक्त है उसमें विषय साल किन्तु प्रमाणिक है। उसका उपयोग उचित रहेगा।

3) हम अपने प्रवचनों को आगम से जोड़कर रखें। धर्म के 10 लक्षण तो वही रहेंगे जो आगम में है किन्तु उनकी व्याख्या आधुनिक तरीके से करें। मैं अपने युवा साथियों को बताना चाहता हूं कि कतिपय शब्दों को आधुनिक सन्दर्भ में भी समझे। धर्म या उसके लक्षण को जानना उतना कठिन नहीं है जितना समझते हैं।

धर्म - पंडित जी द्वारा बताई गई धर्म की परिभाषा तो सही होगी किन्तु सरल शब्दों में समझे तो पडोसियों/जरूरत मंदों/ अपने मित्रों/सहपाठियों/सहकर्मियों की बिना कुछ लालसा से करूणा/दया भाव से मदद करना भी धर्म है। क्रोध, अहंकार का त्याग भी धर्म है। धर्म दस नहीं होते, धर्म तो एक ही है, उसके लक्षण दस है।

क्षमा - शक्ति होने के बावजूद किसी की गलती या नुकसान पहुंचाने की चेष्टा को क्षमा करना ही क्षमा है।

मार्दव - अपने शारीरिक बल, ज्ञान, धन आदि का अहंकार न करना मार्दव है। जाति, धर्म एवं कुल का गौरव तो होना चाहिए, किन्तु उससे किसी को नीचा दिखाने की चेष्टा नहीं करना चाहिए।

आर्जव - झूठ बोलकर, षडयंत्र करके किसी को नीचा दिखाने की चेष्टा नहीं करना चाहिए। हमारा आचरण सरल एवं स्पष्ट होना चाहिए। क्षल कपट से रहित होना चाहिए।

सत्य - सदैव सत्य, प्रिय एवं हितकर वचन बोलना चाहिए, यदि ऐसा करना संभव न हो तो मौन रहना चाहिए, अप्रिय (कडुवा) सच या मीठा झूठ (चापलूसी) नही करना चाहिए। कई बार ऐसा करना मुश्किल होता है तो मौन रह जाये।

शौच - शेयर मार्केट हो या अन्य कोई फाइनेन्सियल डील, व्यक्ति लोभ या अधिकाधिक लाभ कम समय में पाने की चाहत में ही नुकसान उठाता है व्यक्ति को ईमानदारी के साथ धनार्जन करना चाहिए। अनैतिक रूप से किसी का दिल दुखाकर, शोषण कर कमाया धन कभी सुख नहीं देता।

संयम - हमारा मन (इंद्रियां) बहुत कुछ खाना/पाना चाहता है उस पर नियंत्रण कर उचित सात्विक खाना एवं नीति पूर्वक शारीरिक सुखों का उपयोग करना चाहिए।

तप- अच्छी पुस्तके पढ़ना, साधुओ की सेवा करना, भूख से कम खाना, अधिक स्वादिष्ट चीजे न खाकर मन को नियंत्रित करना भी तप है।

त्याग - क्रोध, मान (अहंकार), माया (कुटिल आचरण) एवं लोभ (बहुत ज्यादा पाने की इच्छा) को छोडना ही त्याग है। अपनी अतिरिक्त सम्पत्ति धन को अच्छे कार्यो हेतु देना (त्याग करना) दान है।

आंकिचन्य - जन्म के समय हम खाली हाथ आते है। जीवन भर कमाते है अथवा परिवार से लेते है एवं मृत्यु के समय खाली हाथ जाते है। अतः जीवन भर केवल कमाने की आपा-धापी में क्यों उलझना। न्याय पूर्वक शांति से कमाओ उसके प्रति आसक्ति मत रखो।

ब्रह्मचर्य - जीवन साथी के प्रति वफादार रहो यही इसका व्यवहारिक पक्ष है। एतदर्थ अष्लील चित्रों/फिल्मों/साहित्य से बचना चाहिए।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि धर्म को समझना उतना जटिल नहीं है जितना बना दिया गया है। धर्म सरल है, धर्म का पालन उससे भी सरल, बस मन पक्का करो, छोटे से शुरू करो। पर्यूषण पर्व में कुछ 01 वर्ष हेतु छोड़ो, अगले पर्युषण पर त्मअपमू करना, निश्चय ही आपको अच्छा लगेगा। विद्वान वक्तासाथियों एवं ब्रह्मचारी भाई/बहनो से भी मैं यही कहूगा कि आप गुण स्थान, मार्गणा स्थान, वर्गणा स्थान, लेश्या, प्रवृत्ति, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिणति, कर्म प्रकृतियो, निष्चय नय, व्यवहार नय, सम्यक्ता चरण, स्वरूपाचरण पर्याय की क्रमबद्धता की बाते अपरान्हकालीन तत्त्वचर्चा में करे। जब प्रबुद्ध स्वाध्यायी श्रोता होते है। सायंकालीन प्रवचन सभा में जब युवा होते है या आने की संभावना होती है तब आप सरल विषय ले, उनके प्रष्नों/जिज्ञासाओं को आमंत्रित करें और उनको तार्किक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करें। अगर 2-4 युवा भी अपने जीवन की दिषा बदल कर शांति के मार्ग पर चल निकले तो अपका प्रवचन सार्थक हो जायेगा। शास्त्र की गद्दी पर बैठना बडे सम्मान एवं दायित्व का काम है इसको पूर्ण गम्भीरता से लेवें। दषलक्षण में यदि आप किसी तीर्थ पर है तो श्रेष्ठतम है किन्तु यदि अपने ग्रहनगर/ग्राम में है तो पर्यूषण के बाद तीर्थयात्रा पर जरूर जावे। वहॉ की व्यवस्थाओं में सहभागी बने।

अन्त में आप सभी के जीवन में यह पर्यूषण पर्व अविस्मरणीय रहें, जीवन को सुखद बनाने वाला बने, आप सफलता प्राप्त करें, इसी मंगल भावना के साथ।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

प्राकृत भाषा में दशधर्म का सार
दसधम्मसारो

-प्रो डॉ.अनेकांत कुमार जैन

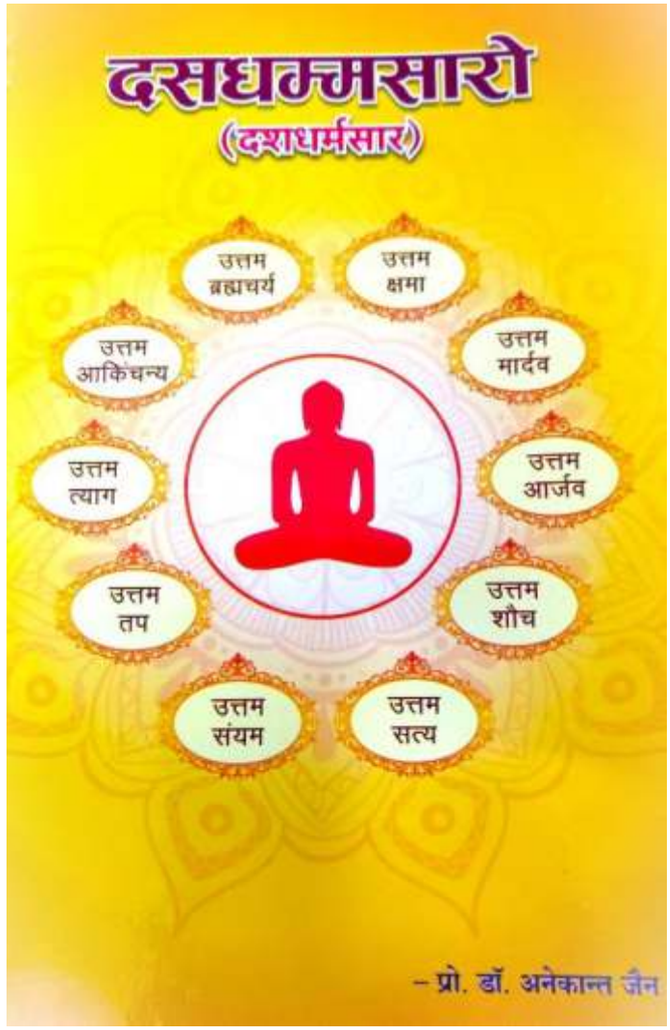

मंगलाचरण

(गाहा)

णमो हु सव्वजिणाणं आयरियोवज्झायसाहूणं य ।
णमो य पज्जुसणाणं णमो दसलक्खणपव्वाणं ।।१।।

सभी जिनेन्द्र भगवंतों को मेरा नमस्कार, सभी आचार्यों, उपाध्यायों और साधुओं को मेरा नमस्कार, पर्युषण को नमस्कार और दसलक्षण पर्वों को नमस्कार ।

(उग्गाहा)

धम्मसरूवं

दंसणमूलो धम्मो वत्थुसहावो खलु जीवरक्खणं ।
चारित्तं सुदं दया धम्मो य सुद्धवीयरायभावो ।।२।।

दर्शन का मूल धर्म है, वस्तु का स्वभाव धर्म है, जीवों की रक्षा ही धर्म है, चारित्र धर्म है , श्रुत धर्म है , दया धर्म है और विशुद्ध वीतरागभाव धर्म है –ऐसा जानो।

धम्मस्स दसलक्खणं

धम्मस्स दसलक्खणं खमा मद्दवज्जवसउयसच्चा य ।
संजमतवचागाकिंयण्हं बंभं य जिणेहिं उत्तं ।। ३ ।।

जिनेन्द्र भगवान् ने धर्म के दस लक्षण कहे हैं – उत्तम क्षमा , उत्तम मार्दव , उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य।

उत्तमखमा

खमा हुअप्पसहावो कोहाभावे य जायइ अप्पम्मि ।
मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।४।।

क्षमा आत्मा का स्वभाव है , वह क्रोध कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होती है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है।

उत्तममज्जवं

मज्जवप्पसहावो य माणाभावे य जायइ अप्पम्मि ।
मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।५।।

मार्दव आत्मा का स्वभाव है , वह मान कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है।

उत्तमज्जवं

अज्जवप्पसहावो य मायाभावे य जायइ अप्पम्मि ।
मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।६।।

आर्जव आत्मा का स्वभाव है , वह माया कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है।

उत्तम-सउचं

सउचं अप्पसहावो लोहाभावे य जायइ अप्पम्मि ।
मिच्छत्तस्साभावे जहा य सम्मत्तं हवइ अप्पम्मि ।।७।।

शौच आत्मा का स्वभाव है , वह लोभ कषाय के अभाव स्वरूप आत्मा में उत्पन्न होता है जैसे मिथ्यात्व के अभाव में सम्यक्त्व आत्मा में प्रगट होता है।

उत्तम-सच्चं

सच्चधम्मे य सच्चे वयणे अत्थि भेओ जिणधम्मम्मि ।
पढमो वत्थुसहावो दुवे अत्थि महव्वयं साहूणं ।।८।।

जिन धर्म में उत्तम सत्य धर्म और सत्य वचन में भेद है। एक (उत्तम सत्य धर्म) तो वस्तु का स्वभाव है और दूसरा (सत्य वचन) मुनियों का महाव्रत है।

शेष पृष्ठ 9 पर .....

पर्यूषण/ दसलक्षण महापर्व 28 अगस्त से 06 सितंबर 2025 पर विशेष आलेख :

पर्यूषण (दशलक्षण) महापर्व : आत्मशुद्धि की ओर एक आध्यात्मिक यात्रा

- डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

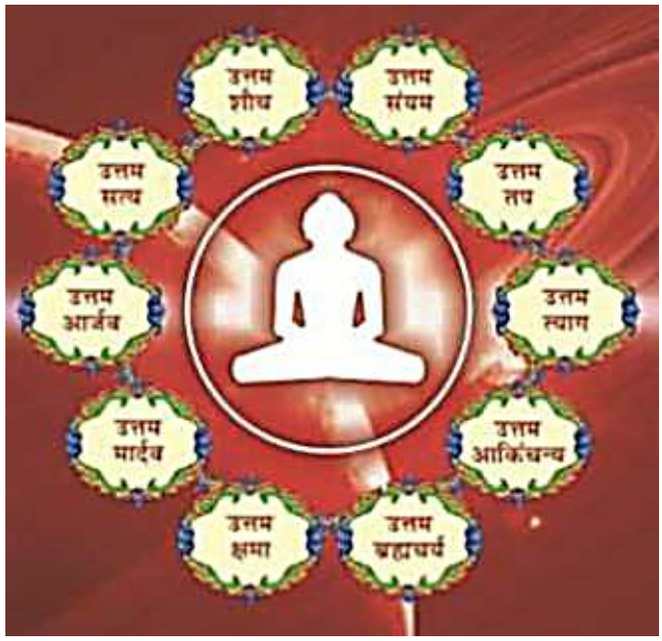

भारत की धर्मप्रधान संस्कृति में पर्व केवल उल्लास और उत्सव का नाम नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, साधना और आत्मोत्थान का अवसर होते हैं। जैनधर्म के अनुयायियों के लिए वर्ष का सबसे प्रमुख अवसर होता है – पर्यूषण पर्व / दसलक्षण पर्व। पर्यूषण यानि दसलक्षण पर्व का जैनधर्म में बहुत ही महत्व है। यह पर्व हमारे जीवन को परिवर्तन में कारण बन सकता है। यह ऐसा पर्व है जो हमारी आत्मा की कालिमा को धोने का काम करता है। दिगम्बर एवं श्वेतांबर जैन दोनों में यह पर्व भारी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

यह पर्व आत्मशुद्धि, संयम, क्षमा और करुणा की भावनाओं को जीवन में उतारने का पुनीत अवसर है। जैन परंपरा में यह पर्व मोक्षमार्ग की तैयारी का एक ऐसा विशेष काल है, जिसमें व्यक्ति कर्मों के क्षय हेतु विविध धार्मिक आराधनाएं करता है।

पर्युषण का शाब्दिक एवं दार्शनिक अर्थ : 'पर्युषण' शब्द संस्कृत धातु 'उष्' से बना है, जिसका अर्थ है – ठहरना, वास करना, निवास करना। 'परि + उषण' का सामासिक अर्थ हुआ – चारों ओर से आत्मा में वास करना।

इस पर्व का उद्देश्य ही है – "बाह्य विषय-वासना से हटकर आत्मा में रमण करना।"

पर्युषण का वास्तविक संदेश है –

- आत्मावलोकन करना
- कषायों का नियंत्रण
- तप-स्वाध्याय द्वारा आत्मा को निर्मल बनाना
- और सबसे महत्वपूर्ण
- क्षमाभाव को अपनाना।

यह पर्व जीवमात्र को क्रोध, मान,माया,लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, असंयम आदि विकारी भावों से मुक्त होने की प्रेरणा देता है। हमारे विकार या खोटे भाव ही हमारे दु:ख का कारण हैं और ये भाव वाह्य पदार्थों या व्यक्तियों के संसर्ग के निमित्त से उत्पन्न होते हैं। आसक्ति—रहित आत्मावलोकन करने वाला प्राणी ही इनसे बच पाता है। इस पर्व में इसी आत्म दर्शन की साधना की जाती है। यह एक ऐसा अभिनव पर्व है कि जिसमें अपने ही भीतर छिपे सद्गुणों को विकसित करने का पुरुषार्थ किया जाता है। अपने व्यक्तित्व को समुन्नत बनाने का यह पर्व एक सर्वोत्तम माध्यम है। इस दौरान व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियां जग जाती हैं।

आत्मा के दश गुणों की आराधना : इस पर्व में आत्मा के दश गुणों की आराधना की जाती है। इनका सीधा सम्बंध आत्मा के कोमल परिणामों से है। इस पर्व का वैशिष्ट्य है कि इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर आत्मा के गुणों से है। इन गुणों में से एक गुण की भी परिपूर्णता हो जाय तो मोक्ष तत्व की उपलब्धि होने में किंचित् भी संदेह नहीं रह जाता है।

दशलक्षण धर्म के ये दस लक्षण आत्मा की दशा को सुधारने वाले दस पावन भाव हैं:

- उत्तम क्षमा : दूसरों की गलतियों को क्षमा करना और अपनी भी भूलों को स्वीकार कर क्षमायाचना करना।
- उत्तम मार्दव : नम्रता और विनम्रता – यह अहंकार की जड़ काटने वाला गुण है।
- उत्तम आर्जव : सरलता और निष्कपटता – छल, कपट और दिखावे से दूर रहकर जीवन जीना।
- उत्तम शौच : बाह्य नहीं, भीतर की पवित्रता – मन, वचन, काया की शुद्धि।
- उत्तम सत्य : वाणी, विचार और आचरण में सत्य का पालन।
- उत्तम संयम : इंद्रियों का नियंत्रण, संयम से जीवन को स्थिरता देना।
- उत्तम तप: साधना और तपस्या – कर्मों की निर्जरा का श्रेष्ठ उपाय।
- उत्तम त्याग: स्वेच्छा से मोह का परित्याग, वस्तुओं से आसक्ति का त्याग।
- उत्तम आकिंचन्य: ममता रहित, संपत्ति और संबंधों में मोह न करना।
- उत्तम ब्रह्मचर्य : विवेक और आत्मसंयम के साथ जीवन जीना,

विषयों से विरक्ति।

इन दस धर्मों की साधना ही आत्मा की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। अनंत चतुर्दशी को पर्व का समापन होता है।

क्रोध-द्वेष को छोड़कर, क्षमा करें स्वीकार।
पर्युषण है पर्व नहीं, आत्मा का श्रृंगार॥

धार्मिक गतिविधियाँ और साधनाएँ -

इस पर्व के दौरान अनेक धार्मिक आयोजन होते हैं: उपवास, एकासन, स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण, ध्यान, ध्यानशाला, प्रार्थना,जिनपूजन, रथयात्रा, जिनवाणी यात्रा, क्षमायाचना, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि।

दसलक्षण पर्व का वर्तमान संदर्भ में महत्व : आज की भागदौड़, संघर्ष और तनावपूर्ण जीवनशैली में यह पर्व आत्मा के साथ संवाद करने का सुनहरा अवसर है। यह पर्व अहिंसा, आत्मनिरीक्षण और समता की ओर उन्मुख करता है। यह पर्यावरणीय शुद्धि, मानव संबंधों की सुधारना और सामाजिक समरसता लाने वाला पर्व है। यह पर्व अहिंसा युक्त आहार, ब्रह्मचर्य युक्त व्यवहार और संयमयुक्त विचार को जागृत करता है।

बालकों और युवाओं के लिए सन्देश : आज के युग में युवाओं के लिए यह पर्व Charcter Building Workshop के समान है। यह उन्हें नैतिकता, सच्चाई, दया और क्षमाशीलता की शिक्षा देता है। नशा, क्रोध, ईर्ष्या, घमंड जैसे विकारों से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व को निखारने का अद्भुत अवसर है। पर्व नहीं, यह आत्माराधना का अभियान है : पर्युषण पर्व उत्सव नहीं, अभ्युदय का क्षण है। यह आत्मा के पास आने, उसमें स्थिर होने और उसे निर्मल करने का माध्यम है। यह पर्व आत्मा का उत्सव है, बाहरी तामझाम नहीं।जो इस पर्व को जितना भावपूर्वक मनाता है, उसकी आत्मा उतनी ही निर्मल हो जाती है।

दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में मनाने की परंपरा : जैनधर्म के दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में इस पर्व को मनाने की परम्परा है। विशेष यह है कि श्वेताम्बर समाज भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी से भाद्रपद शुक्ला पंचमी तक सिर्फ 8 दिन का मनाते हैं। जबकि दिगम्बर समाज में 10 दिन का प्रचलन है। यह एक मात्र आत्मशुद्धि और आत्म जागरण का पर्व है।

जीवन को पर्यूषणमय बनाएं :आइए, इस पर्युषण पर्व पर हम संकल्प लें – हम क्षमा को जीवन में अपनाएंगे। हम सत्य, संयम और शुद्ध आचरण का अभ्यास करेंगे। हम आत्मा की आराधना करेंगे और सबके साथ मिलकर कहेंगे –

संयम की साधना करें, आत्मा का हो श्रृंगार।
पर्युषण पर्व में करें, निज अंतर का सुधार॥

पृष्ठ 7 से शेष.....

उत्तम-संजमो

संजमणमेव संजम जो सो खलु हवइ समत्ताणुभाइ ।
णियाणुभवणिच्छयेण ववहारेण पचेंदियणिरोहो ॥९॥

संयमन ही संयम है जो निश्चित ही सम्यक्त्व का अनुभावी होता है। निश्चयनय से निजानुभव और व्यवहार से पंचेन्द्रिय निरोध संयम कहलाता है।

उत्तम-तवो

इच्छाणिरोहो तवो कम्मखवट्ठं सगरूपायरणं ।
णियबहितवो भेयेण तेसु झाणं परमतवोदिट्ठं ॥१०॥

इच्छा का निरोध तप है , कर्म क्षय के लिए अपने स्वरूप में रमण करना तप है ।तप छह अन्तरंग और छह बहिरंग के भेद से बारह प्रकार का होता है उनमें भी ध्यान को परम तप कहा गया है।

उत्तम-चागं

सगवत्थुणं य दाणं चागपरदव्वेसु रागाभावो ।
णाणचागो ण होदि य भेयणाणं अत्थि पच्चक्खाणं ॥११॥

स्व वस्तुओं का दान होता है और पर वस्तुओं में रागद्वेष का अभाव त्याग है। निश्चित ही ज्ञान का त्याग नहीं होता है (जबकि दान होता है) और वास्तव में पर द्रव्यों से भेदज्ञान होना ही प्रत्याख्यान(त्याग) है।

उत्तमाकिंयण्हं

परकिंचिवि मज्झ णत्थि भावणाकिंयण्हं गणहरेहिं ।
अंतबहिगंथचागो अणासत्तो हवइ अप्पासयेण ॥१२॥

पर पदार्थ कुछ भी मेरा नहीं है ऐसी भावना ही उत्तम आकिंचन्य धर्म है –ऐसा गणधरों के द्वारा कहा गया है ।अन्तरंग और बहिरंग परिग्रहों का त्याग और उनके प्रति अनासक्ति आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होती है।

उत्तमबंभचय्यं

बंभणि चरणं बंभं जीवो विमुक्कपरदेहतित्तिस्स ।
विवरीयलिंगेसु खलु आसत्ति कारणं य भवदुक्खस्स ॥१३॥

जीव का परदेह की सेवा से रहित होकर अपनी शुद्ध आत्मा में रमण करना ब्रह्मचर्य है ।निश्चित रूप से विपरीत लिंग में आसक्ति ही भव दुःख का मूलकारण है।

खमापव्वं

जीवखमयंति सव्वं खमादियसे च याचइ सव्वेहिं ।
'मिच्छा मे दुक्कडं ' य बोल्लइ वेरं मज्झं ण केण वि ॥१४॥

क्षमा दिवस पर जीव सभी जीवों को क्षमा करते हैं सबसे क्षमा याचना करते हैं और कहते हैं मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों तथा मेरा किसी से भी बैर नहीं है

धम्मसारो

धारइ जो दसधम्मो पंचमयाले णियसत्तिरूवेण ।
सो अणिंदियाणंदं लहइ 'अणेयंत' सरूवं अप्पं ॥१५॥

इस विषम पंचम काल में भी जो इन दस धर्मों को यथा शक्ति धारण करता है ,वह अतिन्द्रित आनंद और 'अनेकांत' स्वरूपी आत्मा को प्राप्त करता है।

जैन संस्कृति में रक्षा बंधन

रक्षाबंधन : रक्षा के संकल्प का पर्व

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

रक्षाबंधन पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। रक्षाबंधन पर्व को मनाने के पीछे अनेक पौराणिक कथानक जुड़े हुए हैं। जैनधर्म में भी इस पर्व को मनाने के पीछे एक कथानक जुड़ा है। उस कथानक के अनुसार, उज्जयिनी में श्रीधर्म नाम के राजा के चार मंत्री थे - बलि, बृहस्पति, नमुचि और प्रह्लाद। इन मंत्रियों ने शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण श्रुतसागर मुनिराज पर तलवार से प्रहार का प्रयास किया तो राजा ने उन्हें देश से निकाल दिया। चारों मंत्री अपमानित होकर हस्तिनापुर के राजा पद्म की शरण में आए। कुछ समय बाद मुनि अकंपनाचार्य 700 मुनि शिष्यों के संग हस्तिनापुर पहुंचे। बलि को अपने अपमान का बदला लेने का विचार आया। उसने राजा से वरदान के रूप में सात दिन के लिए राज्य मांग लिया। राज्य पाते ही बलि ने मुनि तथा आचार्य के साधना-स्थल के चारों तरफ आग लगवा दी। धुएं और ताप से ध्यानस्थ मुनियों को अपार कष्ट होने लगा, पर मुनियों ने अपना धैर्य नहीं तोड़ा। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक यह कष्ट दूर नहीं होगा, तब तक वे अन्न-जल का त्याग रखेंगे। वह दिन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन था। मुनियों पर संकट जानकर मुनिराज विष्णु कुमार ने वामन का वेश धारण किया और बलि के यज्ञ में भिक्षा मांगने पहुंच गए। उन्होंने बलि से तीन पग धरती मांगी। बलि ने दान की हामी भर दी, तो विष्णु कुमार ने योग बल से शरीर को बहुत अधिक बढ़ा लिया। उन्होंने अपना एक पग सुमेरु पर्वत पर, दूसरा मानुषोत्तर पर्वत पर रखा और अगला पग स्थान न होने से आकाश में डोलने लगा। सर्वत्र हाहाकार मच गया। बलि के क्षमायाचना करने पर उन्होंने मुनिराज अपने स्वरूप में आए। विष्णु कुमार मुनि ने साधर्मी मुनियों की इस दिन रक्षा की थी, इसलिए साधर्मी, गुणी बंधु बान्धवों की रक्षा करना हम सबका परम कर्तव्य है। जैन धर्म में तो प्राणिमात्र की रक्षा करने का उपदेश दिया गया है। श्री विष्णुकुमार महामुनि ने विक्रियाऋद्धि के प्रभाव से उज्जयिनी से आकर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा किये गये उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी, वह तिथि 'श्रावण शुक्ला पूर्णिमा' थी, तभी से आज तक यह तिथि 'रक्षाबंधन' पर्व के नाम से सारे भारत में विख्यात है। इस तरह सात सौ मुनियों की रक्षा हुई। सभी ने परस्पर रक्षा करने का बंधन बांधा।

रक्षा बंधन पर्व की महत्ता इसीलिए तो है कि महान आत्मा ने रक्षा का महान कार्य सम्पन्न कर संसार के सामने रक्षा का वास्तविक स्वरूप रखा- जीवों की रक्षा, अहिंसा की रक्षा, धर्म की रक्षा। किंतु आज यह रक्षा उपेक्षित है, हम चाहते हैं 'सुरक्षा', मगर किसकी? मात्र अपनी और अपनी भौतिक सम्पदा की। आज यह स्वार्थपूर्ण संकीर्णता ही सब अनर्थों की जड़ बन गई है। मैं दूसरों के लिए क्यों चिंता करूं, मुझे बस मेरे जीवन की चिंता है। मैं, मेरा, अपना, आज का सारा व्यवहार यहीं तक केन्द्रित हो गया है। रक्षापना समाप्त हो गया है? स्वयं की परवाह न करते हुए अन्य की रक्षा करना- यह इस पर्व के मानने का वास्तविक रहस्य है। विष्णुकुमार मुनि ने बंधन को अपनाया। अपने पद को छोड़कर मुनियों की रक्षार्थ गए। ऐसा करने में उनका प्रयोजन धर्म प्रभावना और वात्सल्य था। रक्षा के लिए जो बंधन है, वह सभी के लिए मुक्ति का कारण है।

इस तरह रक्षाबंधन का पर्व समाज में प्रेम , वात्सल्य, रक्षा और भाईचारा बढ़ाने का कार्य करता है। संसार भर में यह अनूठा पर्व है। इसमें हमें देश की प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिलती है।

जीवनभर नैतिक, सांस्कृतिक और अध्यात्मिक मूल्य भी इस पर्व में शामिल हैं। यह भारत की गुरुशिष्य परंपरा का प्रतीक त्योहार भी है। यह दान के महत्त्व को प्रतिष्ठित करने वाला पावन त्योहार है। यह वात्सल्य का पर्व भी है, यह मुनि रक्षा का पर्व भी है। यह भाई- बहिन के अटूट प्रेम प्रतीक पर्व भी है।

रक्षाबंधन पर्व पर प्रत्येक श्रावक को धार्मिक, सामाजिक एवं लोगोपकारी कार्यों की सम्पन्नता हेतु यथेष्ट दान अवश्य देना चाहिए। यह एक अद्भुत पर्व है। यह दिन बंधन का दिन होने पर भी पर्व माना जाता है। पर्व या उत्सव में तो स्वतंत्रता होती है। आज का दिन तो बंधन का दिन है, बंधन भी सामान्य बंधन नहीं,प्रेम का बंधन। यह वात्सल्य का प्रतीक है। रक्षा बंधन अर्थात रक्षा के लिए बंधन आजीवन बडे उत्साह के साथ चलता है। सामान्य बंधन से तो मुक्ति सम्भव है, परंतु यह बंधन है जिससे मुक्ति नहीं। यह बंधन मुक्ति में सहायक है, क्योंकि यह रक्षा का बंधन है। जीवों पर संकट आते हैं, सभी अपनी शक्ति अनुसार उनका निवारण करते है, परंतु सभी ऐसा नहीं कर पाते। मनुष्य ही ऐसा विवेकशील प्राणी है जो अपने और दूसरों के संकट को दूर करने में समर्थ है। मनुष्य ही अपनी बुद्धि और शारीरिक सामार्थ्य से अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है। रक्षा के लिए ही धर्म का विश्लेषण है कि जीवों की रक्षा किस प्रकार करें, उनके विकास के लिए क्या प्रयत्न करें?

हमारे द्वारा सम्पादित कार्य बाहर और भीतर से एक समान होना चाहिए। रक्षा बंधन को सच्चे अर्थों में मनाना है तो बाहर और भीतर से एक समान होना चाहिए। रक्षा बंधन को सच्चे अर्थों में मनाना है तो अपने भीतर करूणा को जाग्रत करें। अनुकम्पा, दया और वात्सल्य का अवलम्बन लें। रक्षा बंधन का अर्थ है कि हममें जो करूणाभाव है वह तन-मन धन से अभिव्यक्त हो। यह एक दिन के लिए नहीं, सदैव हमारा स्वभाव बन जाय, ऐसी चेष्टा करना चाहिए।सत्वेषु मैत्री-प्राणी मात्र के प्रति मित्रता का भाव हमरे जीवन में उतरना चाहिए। तभी हमारा यह पर्व मनाना सार्थक है।

भारतवर्ष की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला हाथी अब हमें गांव, नगर के गली कूचों में प्रत्यक्ष देखने नहीं मिलेगा

- पवन घुवारा भूमिपुत्र

भारतवर्ष की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला हाथी अब नही दिखेगा गांव नगर के गली कूचों में क्यों कि यह PETA (पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स) नामक संगठन ने जहां भारतीय कानून का सहारा लेकर हमारे हजारों साल पुरानी संस्कृति पर कुठाराघात करने का कार्य एक वृहद योजना बद्ध तरीके से किया जा रहा है, अभी तक हमारे करोड़ों-करोड़ देश वासियों को साथ ही साथ छोटे छोटे नन्हे मुन्ने बच्चों को गांव-गांव, नगर-नगर गली-कूचों में कस्बों में महात्मा महाती हाथी लेकर आते थे और हम सभी के आराध्य ईश्वर श्री गणेश जी भगवान के दर्शन, आशीर्वाद मिल जाता था और धार्मिक अनुष्ठान के अनुसार हाथी को गन्ना ,केला आदि फल खिलाकर एक आत्म शांति की अनुभूति का अनुभव हो जाता था ,और भारतीय संस्कृति में धार्मिकता के वातावरण का विचरण होता रहता था लेकिन अब यह सब नही हो सकेगा।

पवनघुवारा ने विचारार्थ कहा है ,मन में एक ही सवाल बार बार आ रहा है कि PETA इस संगठन को बूचड़खाने जा रहे बैलों के प्रति सहानुभूति कभी भी नहीं हुई या उनके साथ नैतिक व्यवहार करने का मन नहीं किया और आज भी बड़े पैमाने पर गाय, बैल और बछड़े, बकरी आदि बेजीजक काटे जा रहे हैं, किंतु इस संगठन को इस वध को रोकने के लिए कभी भी उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय जाने का मन नहीं हुआ।

क्योंकि जिसतरह से हाल ही में महाराष्ट्र के नादंणीमठ से माधुरी हथिनी को अम्बानी के वंतारा में PETA संगठन द्वारा ले जाया गया है संज्ञानात्मक यह भी है कि प्रमुख कहा के यह गम्भीरतम सबाल संदेश ही नही है फरमान मान कर चलना चाहिए, कि अब अपने भारत देश में आगे से कहीं-भी कभी-भी हाथीयों का, महाती महात्माओ के साथ प्रत्यक्ष देखने नही मिलेगा, अपनी आँखों से जगह जगह विचरणकरते हुए नही देखेंगे। जहां पशु कल्याण को धार्मिक महत्व दिया जाता है अब एक जटिल परिस्थितियों में जन मानस है।धार्मिक प्रथाओं और वन्यजीवों की सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है, महादेवी हथिनी की आँखों में आँसू हैं..!!

नांदनी मठ महाराष्ट्र में एक परिवार के सदस्य की तरह रह रही हथिनी (माधुरी) को अंबानी के वंतारा की शोभा बढ़ाने के लिए मठ से छीना गया। यह अति निंदनीय है।आज लाखों लोगों की आँखों में आँसू की कीमत और अब उस बेजुबान जानवर माधुरी की आँखों में आँसू की कीमत, जहां देश के आचार्य मुनि महाराज संत महात्मा की चारों दिशाओं से आवाज आ रही है माधुरी को एक पूजनीय स्थल पर रखा गया था, जहां उसे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ पूजा जाता था। उसके स्थानांतरण से धार्मिक समुदाय के लोगों की भावनाएं आहत हैं।अध्यात्मिक दृष्टिकोण से, माधुरी को एक जीवित प्राणी के रूप में देखा जा सकता है जो अपने आप में एक आत्मा है, और उसका स्थानांतरण उसके आध्यात्मिक संतुलन और शांति को प्रभावित कर सकता है।अध्यात्मिक दृष्टिकोणों में, जानवरों को भी आत्मा के रूप में देखा जाता है और उनके साथ दया और करुणा के साथ व्यवहार करने का महत्व है।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण - उसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को कम करता है, क्योंकि वह एक पूजनीय स्थल पर रह रही थी। पशु अधिकार दृष्टिकोण - से उसके अधिकारों का हनन हुआ है, और उसे उसके मूल स्थान पर ही रहने देना चाहिए था,धार्मिक स्थल पर ही रखने से धार्मिक भावनाओं का सम्मान ,पशु कल्याण और विशेष धार्मिक अनुष्ठान मूल्यों का संतुलन सम्मान है।

विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना और विचार करना आवश्यक है। गोरतलब है कि हथिनी (माधुरी) को वंतारा में सुप्रीम कोर्ट के आदेश अनुसार प्रतिपालन में नांदनी मठ से भेजा गया। लेकिन जहां तक सुत्रो से ज्ञात हो रहा है कि वंतारा में हथिनी (माधुरी) खुश नही है ओर जब यह सब स्थिति को वंतारा के प्रशासनिक अधिकारियों के संज्ञान में आया तो उन्होंने तुरन्त ही कोल्हापुर जिले के प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क किया और जहां एक वृहद बैठक जिसमें सांसद विधायक सहित वंतारा के प्रमुख भी उपस्थित रहे क्योंकि वंतारा में हथिनी (माधुरी) खुश नही ओर चूंकि स्वास्थ्य भी अनुकूल प्रतीत नही हो रहा है अतः पवनघुवारा भूमिपुत्र ने सभी पक्षकार जनों के साथ शासन प्रशासन से अनुरोध किया है कि वास्तविक परिस्थितियों से भारत सरकार के मंत्री परिषद को पत्र लिखकर अवगत कराया जाना चाहिए, ताकि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का पालन भी हो ओर यदि वंतारा में हथिनी (माधुरी) खुश नही है तो मानवीय आधार पर पुनः कुछ समयावधि को वापिस नांदनी मठ में रखा जाना वहा भी वंतारा की देखरेख रहे, साथ ही मठ प्रबंधन भी देखता रहे ताकि हथिनी (माधुरी) खुश रहे क्योंकि हथिनी माधुरी महादेवी जिसकी देखभाल नांदनी मठ अपनी बेटी की तरह करता रहा है,ओर स्वास्थ्य रहे यही भावनाओं के मध्य है पशुपालन, पशु रक्षा, पशु सेवाएं भी होती रहे हथिनी माधुरी को वापिस दो वापिस दो...अर्जी हमारी है, मर्जी तुम्हारी है!!!

प्रतियोगी नहीं प्रतिभागी बनने का उद्देश हो चातुर्मास

-डॉ. जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप
(राष्ट्रीय मंत्री-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी)

जैनधर्म इस धरती का एक ऐसा वरदान स्वरूप धर्म है जिसके द्वारा यहाँ जन्म लेने वाली कोई भी आत्मा अपने जीवन को मोक्षमार्ग में प्रेरित कर सकती है। ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्त इतने अधिक करुणामयी और मानवतावादी हैं कि जिन पर चलकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में अत्यंत सरलता, आत्मा में निर्मलता और मन-वचन व काया में पवित्रता प्राप्त कर लेता है।

ये 'सरलता', 'निर्मलता' और 'पवित्रता', ऐसे रहस्यमयी शब्द हैं, जिनको सामान्य अर्थ में तो बहुत ही साधारण शब्द माना जा सकता है लेकिन इन शब्दों की गहराई में यदि जाएंगे तो ये 'शब्द' केवल 'शब्द' नहीं अपितु एक ऐसा व्यवहार है, जो हमारे जीवन को पूर्ण रूप से बदलकर सच्चे मानव की परिभाषा में परिणत करता है। इतना ही नहीं 'सच्चे मानव' के बाद इन्हीं शब्दों का व्यवहार हमारे जीवन को 'भगवान' के रूप में भी परिवर्तित करने में साकार होता है।

अत: ऐसे जैन धर्म के अनुयायी होकर, हमें इतना गर्व करना चाहिए कि हमारे पास इस धरती का कोहिनूर हीरामयी जैनधर्म है, जिसके बल पर हमारा जीवन जीना अत्यंत सार्थक सिद्ध हो सकता है।

वर्तमान में निश्चित रूप से हमारी युवा पीढ़ी अनेक विसंगतियों के साथ दिग्भ्रमित है। कोई धर्म को रूढ़िवादिता के रूप में देखता है, कोई धर्म को नास्तिक्य में देखता है, कोई धर्म में समाज के विभिन्न विवादों के कारण रुचि नहीं लेता है, कोई साधुओं के विभिन्न मन्तव्यों से दिग्भ्रमित होता है, कोई धर्म की वास्तविकता तक नहीं पहुँचता है, कोई धर्म के सिद्धान्तों को अपने मन के अनुरूप परिणत करने का प्रयास करने लगता है, कोई धर्म के सिद्धान्तों में सुधारवादी बनने की भावना रखता है, कोई धार्मिक चर्याओं के साथ जीने में दृढ़ संकल्पित नहीं हो पाता है अथवा उसे स्वीकार नहीं कर पाता है, ऐसे विभिन्न कारणों के साथ आज की युवा पीढ़ी अवश्य ही सच्ची राह को नहीं खोज पाने के कारण अथवा सच्ची राह पर नहीं चल पाने के कारण अथवा सच्चा मार्गदर्शन नहीं हो पाने के कारण कहीं न कहीं दिग्भ्रमित होकर अपनी एक अलग विचारधारा स्थापित करने लगती है। निश्चित रूप से जो बात कही जा रही है, वो भले प्रत्येक युवा पर लागू न हो, लेकिन आज सार्वभौमिक दृष्टि से समाज में इस प्रकार का वातावरण देखने को मिल रहा है।

इन सब व्यासंगों को यदि हम परिशोधित अथवा परिष्कृत करना चाहें, तो निश्चित ही हमारे पास "चातुर्मास" एक ऐसा अवसर आता है, जब हम विभिन्न साधुसंघों का एक स्थान पर प्रवास पाते हैं। ऐसे समय वर्ष के ४ माह हमें जैनधर्म के सिद्धान्तों, नियमों, ग्रंथों आदि पर एकाग्रता के साथ चिंतवन करने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक वर्ष में "चातुर्मास काल" एक ऐसा समावेश है कि जो साधुओं के जीवन के लिए अथवा श्रावकों के जीवन के लिए अर्थात् दोनों ही गृहस्थ और श्रमणचर्या के लिए चिंतवन करने का, विचार-विमर्श करने का, सच्चा रस खोजने का निमित्त बनता है।

लेकिन यहाँ कहने का यह तात्पर्य है कि "वर्तमान में वर्षायोग एक 'प्रतियोगी' की भूमिका में दिखाई पड़ता है"। एक सम्पादक अथवा लेखक की अपेक्षा से यदि इस वाक्य पर दृष्टि की जाये, तो यह किसी भी आलोचनात्मक दिशा की ओर नहीं अपितु सकारात्मक दिशा के लिए इंगित हो रहा है कि वर्तमान समय में चातुर्मास का महत्व साधना, तपस्या, स्वाध्याय, ध्यान, चिंतवन, समाज का एकीकरण, समाज के समक्ष सच्चे ज्ञानादर्श का प्ररूपण इत्यादि के साथ अवश्य ही होना चाहिए, जो अनेकश: काफी स्थानों पर अपने समूचे स्वरूप के साथ होता भी होगा, लेकिन इसी के समानान्तर वर्तमान में एक दूसरा भी परिप्रेक्ष्य चल रहा है, जिसमें "प्रतियोगी" की भूमिकाएँ प्रतीत हो रही हैं। चाहे इस विषय को साधुओं के पद, नाम, उच्च स्थान, वरियता या ख्याति के साथ जोड़ा जाये, चाहे कलश-स्थापना के प्रसंगों से जोड़ा जाये, चाहे चातुर्मास-भर में कहाँ-कितना प्रचार-प्रसार या व्यय हुआ है, इससे जोड़ा जाये ; सभी दृष्टिकोण से कहीं न कहीं एक "प्रतियोगी" की झलक भी हमारे समाज में देखने को मिल रही है। फिर चाहे एक समाज से दूसरी समाज की तुलना हो, या एक साधु संघ से दूसरे साधु संघ की तुलना।

इस संदर्भ में एक ही बात से मन को समाधान प्राप्त होता है कि हमें हमेशा ही अपने जीवन में किसी भी कार्यक्षेत्र में 'प्रतियोगी' के स्थान पर 'प्रतिभागी' बनने का लक्ष्य रखना चाहिए, यदि हमारी दिशा आपसी सामंजस्य, प्रेम और एकता की होवे। प्रतियोगी किसी विषय को जीतने का प्रयास करता है, जबकि प्रतिभागी उस विषय में सम्मिलित होकर अपनी सराहनीय उपस्थिति दर्ज कराता है और एक सार्वभौमिक संदेश देता है कि वह किसी भी कार्य में सार्वजनिक रूप से संलग्न हुआ और उसने ज्ञान, यश आदि विभिन्न उपलब्धियों को प्राप्त किया।

अत: वर्तमान में धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ स्वयं का प्रचार-प्रसार अथवा योजनाएँ अथवा कार्यक्रम अथवा उसकी सफलताएँ मायनें न रखते हुए समाज के हर वर्ग में भीतरी गहराईयों तक धर्म के किन सिद्धान्तों की दृढ़ता सिंचित हुई है, इस बात का अवश्य ही लक्ष्य होना चाहिए। इस सिंचन में एकता, आपसी प्रेम, पंथों और परम्पराओं के प्रति सौहार्द्र, ज्ञान प्राप्ति के प्रति ललक, जीवन में धर्म के अवतरण का मुख्य उद्देश्य, नई पीढ़ियों में धार्मिक संस्कार, यथायोग्य-व्रत, नियम, त्याग आदि के साथ संयमित जीवन, इन सब बातों का प्रतिभाग होना चाहिए, बजाए प्रचार-प्रसार आदि अन्य यशोगानपूर्ण उद्देश्यों के। अस्तु!

अपने बच्चों के साथ घर में बैठकर मेरी भावना का सस्वर पाठ करें

सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
अध्यक्ष, जैन तीर्थ नैनागिरि

लघुतम प्रार्थना **मेरी भावना** के माध्यम से हम मैत्री की सतत प्रार्थना करें। भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक रूप से स्वस्थ, सशक्त एवं प्रसन्न रहें। अपने बच्चों के साथ घर में बैठकर मेरी भावना का सस्वर पाठ करें। भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक रूप से स्वस्थ, सशक्त एवं प्रसन्न रहें।

2. घर बैठे **मेरी भावना** हमें ऐसी तकनीकें सिखाती है जिनकी मदद से हम अपने जीवन की उलझनें सुलझा सकते है। सभी परेशानियॉं दूर कर सकते है। प्रतिदिन मेरी भावना पढकर हम अपनी भावनाओं में सहजता, सरलता और तरलता ला सकते है। अपनी भावनाओं की सौम्यता और पावनता में वृद्धि कर सकते हैं।

3. **मेरी भावना** हमें मॉं की भांति संस्कारित करती है और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया समझाती है। मेरी भावना पढ़ने से हमारी सोच सदैव सात्विक और सकारात्मक बनी रहती है। मेरी भावना मानव जीवन के लिए सर्वोच्च आदर्श का निर्धारण कर उसकी प्राप्ति के लिए वृहत्तम और लघुत्तम सुलभतम साधन उपलब्ध कराती है। **मेरी भावना** हमें सफल जीवन जीने के साथ-साथ सार्थक जीवन जीने का पाठ पढ़ाती है। सफलता से भी आगे बढ़कर सार्थक सोपानों पर ऊपर चढ़ने की सीख प्रदान करती है। अतः हमारा पाठकों से आग्रह है कि अपने घर में बैठकर पूरे परिवार के साथ जैन धर्म की छोटी सी कुंजी **मेरी भावना** का पाठ करें। **मेरी भावना** में वर्णित नैतिक मूल्यों का अक्षरश: पालन करने का ठोस प्रयास करें। इसमें वर्णित अच्छाईयों का एक बीज अपने व्यक्तित्व में प्रतिदिन वपन करें।

4. क्षमा से ओतप्रोत **मेरी भावना** मैत्री भावना को जन्म देती है और पारस्परिक मैत्री को गहनता प्रदान करती है। **मेरी भावना** हर पल हमें ज्ञान के नए-नए बिन्दु प्रदान करती है। इसका पाठ हम जितनी बार करते हैं, हर बार कुछ न कुछ नया सद्गुण उभरता है। हमारे जीवन को ऊँचा उठाने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ कविता है। सदैव गुनगुनाने वाली प्रार्थना है। सदैव पालन करने वाली और अपने व्यक्तित्व में उतारने वाली रचना है। जीवन को स्वस्थ रखने वाली और विकसित करने वाली उत्तम दवा है। सतत पान करने योग्य अमृत वाणी है। व्यक्तिगत कल्याण के लिए अणु जैसी लघुत्तम एवं सर्वोत्तम प्रार्थना है। मेरी भावना पढ़ने से हमें अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है।

5. **मेरी भावना** के अनेक शब्द हमारे जीवन में प्रवेश कर गए हैं और उन्होंने हमारे मन और मस्तिष्क में अपना स्थायी आवास बना लिया है। सरलता, विनम्रता और मिठास से ओतप्रोत मेरी भावना हमारी पावन भावना के रूप में मूर्तिमंत एवं जीवंत हो गई है। मेरी भावना में झंकृत सेवा के स्वरों के माध्यम से वात्सल्य की शीतल बयार हमारे व्यक्तित्व में सदैव बहती रहती है। हमें जीवन का मधु संचित करने के लिए प्रेरित करती रहती है। **मेरी भावना** अपनी सतत प्रीति से हमारे व्यक्तित्व को सदैव शीतल जल से अभिषिक्त करती रहती है। **मेरी भावना** की प्रत्येक पंक्ति दिव्य एवं प्रभावी है। मंत्र की भॉंति हमें शक्ति प्रदान करती है।

६. हमारे और हमारे बच्चों के भावनात्मक, सार्वदेशिक और सार्वभौमिक विकास के लिए **"मेरी भावना"** प्रथम सीढ़ी है। इसे शाश्वत, सामयिक, सार्वकालिक होने का श्रेय प्राप्त है। सनातन मानव धर्म को आधार बनाकर तैयार की गई यह प्रार्थना हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर है। सामाजिकता, नैतिकता और आध्यात्मिक से ओतप्रोत यह **मेरी भावना** जन-जन में कर्तव्य बोध जागृत करती है। सभी संस्कृतियों और धार्मिक संप्रदायों में आदर्श तथा सम्माननीय व्यावहारिक मानवीय जीवन का प्रतिपादन करती है। इसके पठन/पाठन से जन-जन में सामाजिक कर्तव्य बोध जागृत होता है। अतः प्रत्येक ग्राम और नगर के घर-घर में इसकी उपादेयता है।

७. हमने ग्रामीण लोक नैनागिरि में जन्म लिया है। हमने उस नैनागिरि में जन्म लिया है, जहॉं से वरदत्तादि पांच मुनिवर मोक्ष गए है। हमने नैनागिरि की उस हवा में सांस ली जिस हवा में आज भी भगवान पार्श्वनाथ की देशना तरंगित हो रही है। हमने उस रज को अपने माथे पर लगाया जिस रज को मोक्ष गए वरदत्त और तीर्थंकर बने भगवान पार्श्वनाथ ने अपनी पगतलियों से पावन किया है। नैनागिरि में शिशु और किशोर के रूप में रहते हुए जैन संस्कृति ने हमें परिष्कृत और परिमार्जित किया है। हमारे व्यक्तित्व को रिफाइन किया है। हमने उस मौलिश्री वृक्ष के नीचे बैठकर अपनी मॉं का और अपनी गाय का दूध पिया जहॉं अपना मुण्डन कराने अपने शैशव काल में हमारी पत्नि विमला जी भी पहुँच गई। उनकी नैनागिरि की इस अपरिमित पुण्य प्रदायक यात्रा का यह परिणाम हुआ कि हम तो कलेक्टर ही बन कर रह गए किन्तु वे हाईकोर्ट जज बन गई।

८. वर्षाकाल में हम लोग प्राचीनतम जैन तीर्थ नैनागिरि के जल मंदिर में बैठकर मेरी भावना पढ़ते है। परिणामत: हमारे क्रोध और दुख की भावनाऐं बरसते पानी की बूंदों की भांति नैनागिरि के महावीर सरोवर में घुल मिल जाती है। आप सभी से हमारा विनम्र आग्रह है कि प्रत्येक वर्ष एक दिन-रात नैनागिरि में रहें। अपने व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास करें और नैनागिरि तीर्थ की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करें।

९. भारतीय संस्कृति के दसवी शताब्दि के उद्भट आचार्य अमितगति की संस्कृत भाषा में विरचित एवं मैत्री पर केन्द्रित निम्नांकित पंक्तियों को बार-बार पढ़ें और लिखें:-

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
मध्यस्थ-भावं विपरीत वृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव।।

इन पंक्तियों को सदैव पढ़ें। पुनः पुनः स्मरण करें। सदैव गुनगुनाते रहें। इन पंक्तियों का अर्थ समझें। इन पंक्तियों को अपने अवचेतन मस्तिष्क में प्रवेश कर स्थायी रूप से रहने दें। उन्हें अपने मन का आधारभूत विचार बनने दें। यही विचार आपके मन और मस्तिष्क में शांति का संचार करेगा।

१०. हमें मध्यप्रदेश सरकार के संचालक, लोक शिक्षण के पद पर वर्ष १९८७ से १९९० तक सेवा करने का अवसर मिला है। टाइम्स ऑफ इण्डिया के तत्कालीन कार्यपालिक निदेशक श्री रमेशचन्द्र साहू की प्रेरणा से हमें **मेरी**

भावना को कक्षा सातवी की भाषा भारती में जोड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की दोनों सरकारों के द्वारा कक्षा सातवीं की **भाषा भारती** की प्रतिवर्ष १२ लाख से अधिक प्रतियॉ प्रकाशित की जाती है। इस भाषा भारती में प्रकाशित **मेरी भावना** की निम्नांकित दस पंक्तियॉ हिन्दी प्रार्थना के रूप में सम्मिलित की गई है -

मैत्री भाव में जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहें।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा-स्त्रोत बहे।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आए।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणिति हो जाए।।
गुणीजनों का देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आए।
बने जहॉ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पाए।।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आए।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जाए।।
फैले प्रेम परस्पर जग में, औरों का उपकार करें।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करें।।

११. आपसे स्नेहपूर्ण आग्रह है कि आप अकेले ही इन पंक्तियों को नियमित रूप से गुनगुनाऐं। परिवार के साथ मिल-जुलकर इनके प्रत्येक शब्द पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए सस्वर पाठ करें। इन पंक्तियों में से जो पंक्तियॉ आपको अच्छी लगें उन्हें एक कार्ड पर लिखलें। यह कार्ड अपनी पाकेट डायरी में रखें। घर में सहज गोचर स्थान पर टांग दें। इन पंक्तियों को बार-बार दुहरायें। दो पंक्तियॉ पढ़कर सभा का मंगलाचरण करें। हमारी पत्नि न्यायमूर्ति विमला जी ने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की शपथ लेते समय मेरी भावना की इन पंक्तियों का सस्वर पाठ किया था, जिसकी पूरे देश में सराहना की गई। हम **मेरी भावना** को हाव-भाव और लय पूर्वक पढ़ें। सरल और सहज प्रवाह में पढ़ते हुए हम सही ढंग से प्रार्थना करें। प्रार्थना करते समय सकारात्मक विचार रखें। हम कभी भी किसी के प्रति घृणा, नफरत और ईर्ष्या न करें। मन में असंतोष और डर न पालें। सभी से प्रेम करें। हम शुद्ध, मन, वचन और कर्म पूर्वक यह प्रबल प्रार्थना करें।

13. कुछ क्षणों के लिए अपने प्रभु की प्रार्थना करते हुए मेरी भावना पढ़ें। मेरी भावना का पाठ करें। पूरे विश्वास पूर्वक मेरी भावना पढ़ने से हमें भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक और भौतिक शक्तियॉ प्राप्त होती है। हमारी व्यक्तिगत क्षमता और योग्यता बढ़ जाती है। हमारी व्यक्तिगत समस्यायें सुलझ जाती है। यह भावना हमारी महत्वपूर्ण सहयोगी शक्ति है। इसके पठन करने से हमें शक्ति प्राप्त होने लगती है। हमें अच्छे कर्तव्यों की प्रेरणा प्राप्त होने लगती है। हमारे दैनंदिनी कृत्य हमें अच्छे परिणाम देने लगते है। यह भावना हमें आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ बना देती है। आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होते ही हम शारीरिक मानसिक रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न हो जाते है।

मुल्तान, पाकिस्तान में एक शानदार 150 साल पुराना जैन मंदिर

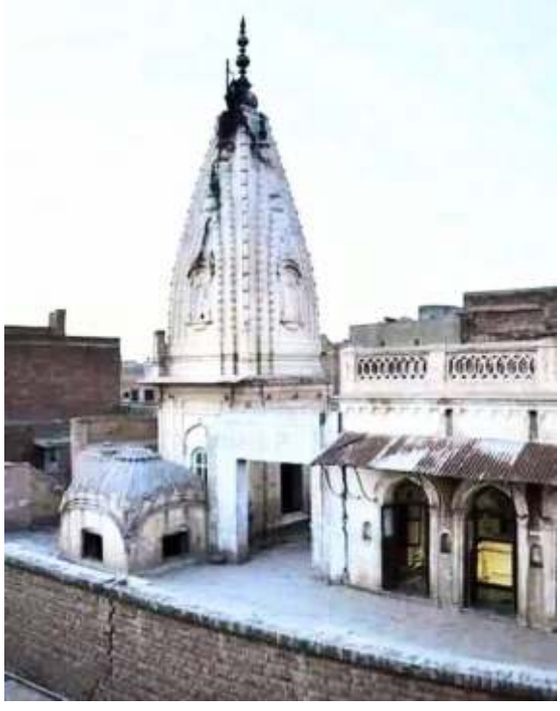

जैन मंदिर की दीवारों पर जैन धर्म के सभी तीर्थंकरों के चित्र आज भी मौजूद हैं। मंदिर की दीवार पर नवकार मंत्र अंकित है। यह जैन मंदिर 150 साल पुराना था। जब 1947 में भारत और पाकिस्तान का बंटवारा हुआ। चारों ओर दंगे हुए थे। भारत से पाकिस्तान या पाकिस्तान से भारत जाने वाली ट्रेनें और बसें टर्मिनस पर पहुंचते ही कब्रिस्तान में तब्दील हो गईं। पंजाब के मुल्तान में एक जैन मंदिर था जो बंटवारे के बाद अब पाकिस्तान में है। जैन समुदाय मुल्तान से भारत में मूर्तियों के हस्तांतरण के बारे में चिंतित था। दंगों के कारण वे बस या ट्रेन से भारत नहीं जा सकते थे और न ही पाकिस्तान में रह सकते थे। समुदाय के कुछ लोग चार्टर्ड विमान लेने के लिए दिल्ली गए थे। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली तो वे बंबई चले गए। अंत में उन्हें एक निजी कंपनी से प्रति व्यक्ति 400 रुपये के किराए पर एक विमान मिला। (आप उस समय 400 Rs की कीमत की कल्पना कर सकते हैं) *विमान में लोगों के साथ मंदिर की 85 मूर्तियां, तमाम जिनवाणी, घरेलू सामान लाया गया। यह ओवरलोड हो गया। पायलट ने यह कहते हुए इसे उड़ाने से मना कर दिया कि यह डबल लोडेड है। उन्होंने केवल 2-3 मूर्तियाँ लेने का सुझाव दिया। सभी स्त्रियाँ रोते हुए विमान से उतर गईं और कहने लगीं हमें यहाँ छोड़ दो लेकिन सभी मूर्तियाँ और जिनवाणी ले जाओ। घर का सारा सामान निकालने के बाद भी प्लेन ओवरलोड था। पायलट ने कहा कि या तो लोग जा सकते हैं या मूर्तियां। लोगों ने उनसे मूर्तियां ले जाने को कहा। लोगों का ऐसा विश्वास देखकर पायलट हैरान रह गया। उसने सोचा कि अगर वह उन्हें पाकिस्तान में छोड़ देगा तो वे वैसे भी मर जाएंगे। उसने मूर्तियों और लोगों दोनों को लेने का जोखिम उठाया। अंत में विमान ने उड़ान भरी। सभी ने णमोकार मंत्र का जाप किया। उस समय विमान में सवार महिलाओं ने संकल्प लिया कि जब तक विमान जोधपुर नहीं पहुंचेगा तब तक न तो कुछ खाएंगे और न ही पानी पीएंगे। विमान सफलतापूर्वक जोधपुर हवाई अड्डे पर उतरा। पायलट हैरान था कि डबल-लोडेड विमान इतनी आसानी से, सुरक्षित रूप से, बिना किसी परेशानी के उड़ गया। पायलट ने कहा कि उसने कभी ऐसा विमान नहीं उड़ाया जो इतना भार होने के बावजूद इतना हल्का महसूस करता हो। यह एक चमत्कार था। पायलट ने लोगों से उसे मूर्ति दिखाने को कहा नहीं तो वह उन्हें विमान से मूर्तियां नहीं ले जाने देगा। पायलट सिख था। जैनियों ने उन्हें भगवान की मूर्ति के दर्शन (दर्शन) करने से पहले मांसाहार, पेय छोड़ने के लिए कहा, जो अहिंसा के प्रचारक हैं। पायलट ने तुरंत अपने जीवन में मांसाहार न खाने की कसम खाई और अंत में मूर्तियों को प्रणाम किया। ये मूर्तियां और जिनवाणी मुल्तान जैन मंदिर, आदर्श नगर, जयपुर में स्थित हैं। आप इसे देख सकते हैं। पंडित श्री टोडरमल जी की प्रसिद्ध "रहस्य पूर्णा चिट्ठी" मुल्तान के सन्यासियों के लिए लिखी गई है। "अपने धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।"

गुजरात उच्च न्यायालय में गिरनार जैनतीर्थ प्रकरण का समाधान समझौता में समाज को विश्वास में लिया जाए

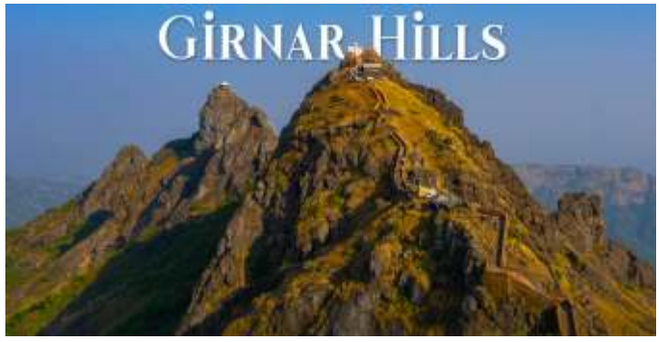

- सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं। कर्मों के फल से न कोई बचा है और न बचेगा।
- सिद्ध निर्वाण चरण-चिह्न की मूल स्थलि को न कोई बदल सकता है और न उसका समझौता किया जा सकता है। वह तो प्राचीन आगम सम्मत धार्मिक विरासत है। उसका सौदा करने का हमें अधिकार ही नहीं है।
- भगवान नेमिनाथ जी की मोक्ष कल्याणक विरासत पांचवीं टोंक में सन् 2004 से अनधिकृत कब्जा
- करके उसमें बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया गया है।
- पांचवीं टोंक का मामला अधिक लंबित हो जाने से उच्च न्यायालय में अब 2 जुलाई 2025 बुधवार से हर बुधवार को प्रकरण का निराकरण होने तक चलेगी। संभावना है डेढ़-दो महिने में फैसला हो जाएगा।
- बण्डीलाल जी दिगंबर जैन कारखाना, जूनागढ़ गिरनार जी और भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्क्षक्षेत्र कमेटी, मुंबई हमारे दिगंबर जैन समाज के प्रतिनिधि के रूप में पक्षकार है। उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति निरल आर. मेहता जी ने एक बुधवार के दिन सुनावाई करते हुए
- कहा है कि दोनों पक्ष मिलकर समझौता कर लें, अन्यथा न्यायालय कोई बड़ा फैसला कर देगा।
- बण्डीलाल कारखाना ने अपनी ओर से तीर्थक्षेत्र कमेटी को जिम्मेदारी सौप दी है। अतः तीर्थक्षेत्र कमेटी ने एक समझौता प्रस्ताव तैयार किया है।
- गुरु दत्तात्रेय शिखर गिरनार पहाड़ पक्ष के ट्रस्टी की ओर से पहले न्यायालय में समझौता प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से जो समझौता प्रस्ताव तैयार किया गया है। उसकी अपेक्षा ऐसा प्रस्ताव तैयार किया जाना चाहिए था कि दत्तात्रेय पक्ष ने

- निर्मलकुमार पाटोदी

दिगंबर जैनधर्म के प्राचीन पांचवीं टोंक पर अनधिकृत कब्जा कर लिया है और उसमें राज्य सरकार और राज्य पुरातत्व विभाग की लिखित अनुमति लिये बिना सब कुछ परिवर्तन कर दिया है। अत: न्यायालय के ध्यान में लाया जाना चाहिए कि वह दिगंबर जैन समाज के तीर्थंकर नेमिनाथ जी की टोंक में जो भी परिवर्तित किए गए हैं, उन सभी को दत्तात्रेय की मूर्ति सहित सभी निर्माण को हटा दिया जाय।

साथ ही माननीय न्यायालय के ध्यान में भी लाना चाहिए कि गुरु दत्तात्रेय शिखर पक्ष का गिरनार पहाड़ पर कमल कुण्ड धार्मिक स्थल है। उस स्थान पर उनकी धार्मिक गतिविधियां चल रही है। न्यायालय गुरु दत्तात्रेय शिखर पक्ष को आदेश दें कि वह दिगंबर जैनधर्म के तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी की निर्वाण-चरण-चिह्न स्थली को मान्य करें। न्यायालय आदेश प्रदान करें कि गुरु दत्तात्रेय शिखर पक्ष ने जैनधर्म के 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी की चरण-चिह्न स्थली पर अनधिकृत किया हुआ है। वह उसे गुरु दत्तात्रेय पहाड़ पक्ष पूरी तरह से नियत अवधि में हटा दें।

- तीर्थक्षेत्र कमेटी के पास पांचवीं टोंक के संबंध में प्रमाण भी बहुत से प्रमाण हैं।
- हमारे दिगंबर जैन समाज की संस्था-जैन धर्म संरक्षण महा संघ भी इस प्रकरण में शामिल हैं। उनके दावे में भी बहुत से ठोस प्रमाण प्रस्तुत किए हुए हैं।
- बुधवार 2 जुलाई को गिरनार जी के कार्यक्रम में विमोचित पुस्तक-गिरनार सत्य और तथ्य भी प्रमाणों के आधार पर तैयार की गई है।
- गिरनार जी प्रकरण में जैनधर्म संरक्षण महासंघ को भी तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना सहयोगी मानते हुए, सहयोग का हाथ बढ़ाते हुए हर संभव सहयोग करते हुए, साथ मिलकर न्यायालय में मजबूती के साथ प्रयास करे, यह व्यावहारिक और हितकारी होगा।
- महंत समुदाय ने गिरनार पहाड़ पर स्थित हमारी टोंकों के नाम सरकार के दस्तावेजों में परिवर्तित करवा दिए हैं। दस्तावेजों में टोंकों के नाम में किया गया परिवर्तन समाप्त करने के लिए न्यायालय से राज्य सरकार को आदेश दिलवाना आवश्यक है।
- भविष्य में गिरनार पहाड़ के संबंध में नाम परिवर्तन न हो, यह निर्देश न्यायालय की ओर से गुजरात राज्य सरकार को प्रदान किया जाना आवश्यक है।

अब समय आ गया है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी समाज के प्रमुख लोगों की तीर्थक्षेत्रों की रक्षा के लिए एर राष्ट्रीय कमेटी का गठन कर दें जिससे पूरा समाज और समाज के संतगण भी जुड़े हों। उनका मार्गदर्शन समय-समय पर लिया जाना आवश्यक है।

गिरनार पर गर्जना: आस्था की आग और अन्याय पर वार!

मयंक जैन, अध्यक्ष-विश्व जैन संगठन, इंदौर इकाई

प्रशासन की तानाशाही के खिलाफ भक्तों का प्रचंड हुंकार!विश्व जैन संगठन के तत्वाधान श्री संजय जैन के नेतृत्व में 23 मार्च 2025 को दिल्ली से शुरू हुई श्री नेमि गिरनार धर्म पदयात्रा, 5 जून को इंदौर पहुंची। इस ऐतिहासिक यात्रा का इंदौर में समस्त समाज ने अभूतपूर्व भव्यता और जोश के साथ स्वागत किया। शोभायात्रा 1.5 किलोमीटर से भी लंबी थी जिसमें 15,000 से भी ज्यादा भक्त सम्मिलित हुए – यह हमारी एकता और शक्ति का प्रमाण था!फिर आया 30 जून 2025 का वो दिन, जब गिरनार यात्रा के लिए इंदौर से भक्तों का जत्था अभूतपूर्व उत्साह और भव्यता के साथ निकला। लगभग 600 यात्रियों का बसों और ट्रेन से एक साथ गिरनार के लिए निकलना ऊर्जा और उम्मीद का एक ऐसा ज्वार पैदा कर रहा था, जिसने हर दिल में भक्ति की आग जला दी। सभी यात्रियों के अदम्य जोश और अटूट भक्ति भाव के साथ हम गिरनार पहुंचे। गिरनार की हवा मन को असीम शांति से भर रही थी, हर साँस में एक दिव्य अनुभव समाया हुआ था, लेकिन यह शांति जल्द ही अन्याय के तूफान में बदलने वाली थी, जिसे प्रशासन ने खुद आमंत्रित किया था! दोपहर 1 जुलाई को गिरनार पदयात्रा का प्रवेश भव्य रूप से गिरनार में हुआ और हम सभी इसमें पूरी तन्मयता से सम्मिलित हुए।2 जुलाई की सुबह 4:00 बजे हमने 30000 हजार से भी ज्यादा की विशाल भीड़ के साथ पहाड़ पर चढ़ना प्रारंभ किया। "जय नेमिनाथ, जय गिरनार!" के गगनभेदी नारों के साथ सभी भक्तगण अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े, मानो हर कदम प्रशासन की अंधेरगर्दी को चुनौती दे रहा हो! धीरे-धीरे अंधेरा छंटने लगा, वहां पहाड़ पर कलकल करते झरने बह रहे थे, शीतल हवा रोम-रोम को स्फूर्ति दे रही थी और हम बादलों के ऊपर थे, मानो स्वर्ग में विचरण कर रहे हों – लेकिन इस स्वर्ग में भी अन्याय की काली छाया मंडरा रही थी, प्रशासन की क्रूरता हमारा इंतजार कर रही थी!हम पहली टोंक पर पहुंचे, वहां जैन भक्तों की इतनी अपार भीड़ थी कि भगवान भी मुश्किल से दिखाई दे रहे थे, फिर भी दर्शनों की लालसा कम न हुई। आगे की टोंक के लिए रवाना हुए, लेकिन पांचवी टोंक पर जाने के लिए जैनियों के सामान की कठोरता, संवेदनहीनता और अमानवीयता से जांच की जा रही थी! यह कैसा प्रशासन है, जो आस्था पर ही वार करता है? यह कैसी सरकार है जो भक्तों को लूटती है? उनसे सारी द्रव्य सामग्री, चावल, बादाम, लाडू और नारियल पुलिस के द्वारा खुलेआम, बेशर्मी से और अन्यायपूर्ण तरीके से छीन लिए गए! यह हमारी धार्मिक स्वतंत्रता पर सीधा हमला था, हमारी आस्था का अपमान था, एक अक्षम्य अपराध! इस घृणित घटना से पूरे जैन समाज में भयंकर रोष और आक्रोश भर गया! कुछ लोगों ने निर्भीकता से, सीना तानकर इसका विरोध किया और उसके बाद पूरा पहाड़ "जय नेमि" के नारों से थर्रा उठा, मानो हर भक्त का कंठ अन्याय के खिलाफ एक तोप बन गया हो! शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो नारे नहीं लगा रहा हो, हर कंठ से विरोध और भक्ति की जयकार एक साथ निकल रही थी – यह प्रशासन के मुंह पर तमाचा था! यह सरकार की नाकामी का सबूत था और कोर्ट के आर्डर की अवमानना थी!जैसे-जैसे पांचवी टोंक नजदीक आ रही थी, अन्याय के इस घोर प्रदर्शन के बावजूद सभी लोगों का जोश दुगने-चौगुने गति से बढ़ रहा था, मानो हर कदम पर ऊर्जा का संचार हो रहा हो और हर नारा प्रतिरोध की ज्वाला बन रहा हो। सभी को दर्शन करने के लिए पर्याप्त समय मिल रहा था, लेकिन प्रशासन की सख्ती और असामाजिक तत्वों के कारण टोंक पर "जय नेमीनाथ" भी बोलने के लिए तानाशाहीपूर्ण और धमकाने वाले ढंग से मना किया जा रहा था। यह हमारी आस्था को कुचलने की कोशिश थी, जिसे हम कभी सफल नहीं होने देंगे! यह सरकार की मनमानी थी, जिसे भक्त समाज ने सिरे से खारिज कर दिया! लेकिन भक्तों की यह प्रचंड, अडिग भीड़ कहां मानने वाली थी! सभी ने मन ही मन अटूट दृढ़ संकल्प कर लिया था, "कोई कुछ भी करे, अंदर जाकर जय तो बोलेंगे ही, और अपने हक के लिए लड़ेंगे भी! यह हमारा अधिकार है, कोई हमसे छीन नहीं सकता! सरकार की दादागिरी नहीं चलेगी!" भक्तों की भीड़ इतनी थी कि हमें 1 घंटे लाइन में खड़ा रहना पड़ा, कुछ लोगों को तो 2 घंटे भी लाइन में खड़ा रहना पड़ा, फिर भी धैर्य और भक्ति अक्षुण्ण रही, और विरोध का स्वर भी बुलंद रहा, जो प्रशासन की नींव हिला रहा था!धीरे-धीरे मैं भी अपने ऊर्जावान और निडर युवा साथियों के साथ पांचवी टोंक के अंदर पहुंच गया। साथियों, मुझे यह लिखते हुए अत्यंत खुशी और गर्व हो रहा है कि मैं अपने लक्ष्य में पूरी तरह सफल हुआ! हमने पांचवी टोंक पर शानदार तरीके से ध्वजा भी फहराई, अन्याय और प्रशासन की तानाशाही के खिलाफ जोरदार "जय नेमि जय जय गिरनार" भी बोला और निर्वाण लाडू भी चढ़ाया! और पूरे जोश से अर्घ्य बोलते हुए बादाम भी चढ़ाए! यह मेरे जीवन की अभी तक की सर्वश्रेष्ठ, सबसे रोमांचक, अविस्मरणीय और विजयपूर्ण यात्रा थी, जिसमें आस्था और साहस का अद्भुत संगम हुआ, और हमने अन्याय के सामने झुकने से इनकार कर दिया! यह हमारी जीत थी, असामाजिक तत्वों की हार!

भगवान पार्श्वप्रभु की मोक्षभूमि पर स्वर्ग सा नजारा

श्री सम्मेदशिखर जी में मोक्ष सप्तमी के अवसर पर धूमधाम से मनाया गया निर्वाण महोत्सव

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से यात्रियों एवं पर्वत की सुरक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था

20 तीर्थंकरों सहित करोड़ों केवली भगवंतों की निर्वाण भूमि, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर्ण व पुरे विश्व के जैनों के पावन पवित्र शास्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी पर दिनांक 31 जुलाई 2025 दिन गुरुवार को जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर श्री 1008 भगवान पारसनाथ का मोक्ष कल्याणक महा-महोत्सव (मोक्ष सप्तमी) दिवस पर तीर्थस्थल मधुबन में बड़े ही धूमधाम के साथ इस वर्ष भी पारसनाथ पर्वत स्थित स्वर्ण भद्र कूट में देश भर के कोने कोने से पधारे हजारों तीर्थ यात्रियों की उपस्थिति में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों के द्वारा निर्वाण लाडू चढ़ाने का कार्यक्रम किया गया। मोक्ष सप्तमी के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मधुबन में भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातः 5 बाजे श्रीजी की प्रतिमा दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी से पालकी पर विराजमान करके स्वर्ण भद्र कूट पर गाजे बाजे के साथ लेकर पर्वत पर गये। मधुबन में विराजमान साधु संत के सान्निध्य आशीर्वाद भी मिला।

अन्य वर्ष से अधिक यात्री इस वर्ष मधुबन पहुँचे थे। देश के कोने कोने से लगभग 15 से 20 हजार तीर्थ यात्रियों ने भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण महोत्सव पर मधुबन पहुंचकर विभिन्न मंदिरों एवं पारसनाथ पर्वत पर निर्वाण लाडू चढ़ाया। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी बीसपंथी कोठी से श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई जो पारसनाथ पर्वत तक पहुंच कर स्वर्ण भद्र कुट में विराजमान कर विशेष पूजा अर्चना के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। 31, 21,11 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से पारसनाथ टोंक को दुल्हन की तरह सजाया गया था। पर्वत स्थित पारसनाथ भगवान का मोक्ष स्थली स्वर्ण भद्र कूट सहित गंधर्व नाला सीतानाला गौतम स्वामी टोंक एवं अन्य जगहों पर स्वागत द्वार एवं अभिनंदन द्वार बनाए गए थे। पारसनाथ पर्वत तक अनेक तोरण द्वार एवं लाईट लगाई गई थी, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो ।इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी कार्यालय के पास एवं पर्वत स्थित गौतम गंधर्व एवं पार्श्वनाथ टोंक के पास चिकित्सा व्यवस्था की गई थी। संस्थान के वरिष्ठ प्रबंधक सुमन कुमार सिन्हा ने बताया कि विभाग से जिन-जिन चीजों की मांग की

गई थी वह सारी सुविधाएं मुहैया कराई गई।

शिविर कैंप भी लगाया गया था। चाय, दूध , उकाली , बिस्कुट आदि की व्यवस्था की इसके लिए उपायुक्त महोदय आरक्षी अधीक्षक महोदय गिरिडीह अग्नि शमन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, विजली विभाग वन विभाग, पुलिस प्रशासन, थाना प्रभारी मधुबन का आभार एवं धन्यवाद करते है यात्रियों का जत्था पारसनाथ पर्वत पर बुधवार रात्रि से ही दर्शन के लिए यात्रा प्रारम्भ कर दिये थे। यात्रियों की सुविधा हेतुप्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एक मेडिकल कैम्प कार्यालय पर एवं पारसनाथ टोंक, गौत्तम स्वामी टोंक पर मितेश जैन दिल्ली के सौजन्य से लगाया गया जिसमे पुरुष एवं महिला डॉक्टर नर्स थे,

कार्यक्रम में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बुप्रसाद जैन, श्री संजय जैन पापडीवाल, उपाध्यक्ष श्री हसमुख गांधी, मंत्री इंदौर, श्री कन्हैयालाल सेठी-अध्यक्ष पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री जवाहरलाल जैन, चेयरमैन स्थापना वर्ष समिति सिकंदराबाद, श्री राजकुमार जैन अजमेरा, महामंत्री श्री दिगम्बर जैन शाश्वत ट्रस्ट, हजारीबाग श्री मनोज जैन, पूर्व राष्ट्रीय मंत्री, श्री संजय जैन, धनबाद, श्री प्रभात सेठी, मंत्री, पूर्वांचल, श्री सुमन कुमार सिन्हा वरिष्ठ प्रबंधक, श्री देवेंद्र कुमार जैन, प्रबंधक श्री संजीव जैन, प्रबंधक जैन शाश्वत ट्रस्ट, श्री पवन शर्मा, पी यार को.

नारी सशक्तीकरण

मुनि प्रमाणसागर

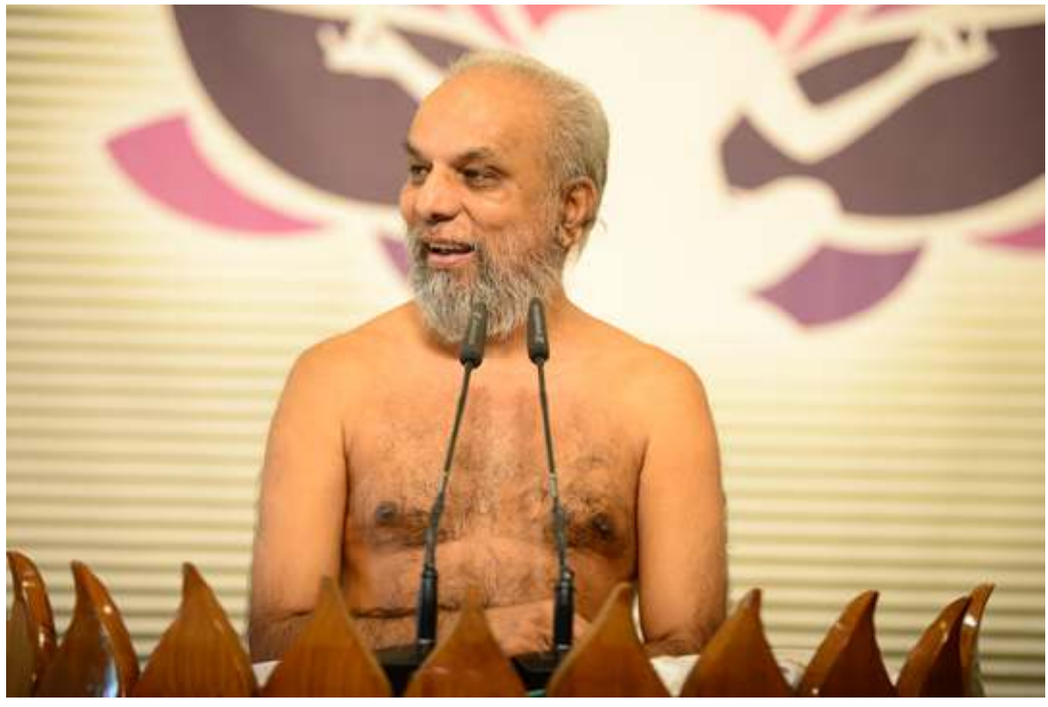

आज हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करने जा रहे हैं। नारी के संदर्भ में जब कभी भी चर्चा होती है तो लोग नारी को दो रूपों में देखते हैं। नारी का एक रूप जो उसके देहगत रूप में दिखता है। जब हमारी दृष्टि नारी के शरीर के प्रति केंद्रित होती है तो हमें वह केवल एक भोग्या के रूप में दिखाई पड़ती है। लेकिन जब हमारी दृष्टि नारी की गुण गरिमा की ओर जाती है तब हमें वह सेवा और साधना की प्रतिमूर्ति दिखाई पड़ती है। भारत की संस्कृति में नारी को एक देह के रूप में नहीं देखा गया। नारी को उसके विराट स्वरूप में लक्षित किया गया है। पश्चिम की अवधारणा में और भारतीय दृष्टिकोण में मौलिक अंतर है। पश्चिमी अवधारणा में नारी केवल नारी है कि स्त्री के रूप में? और भारतीय मान्यता में नारी सेवा, साधना, संयम और त्याग की प्रतिमूर्ति है। आज मैं उसकी ही बात करने जा रहा हूं। नारी जाति में यह दोनों रूप युग युगांतरों से दिखते आ रहे हैं। और हमें इस बात का गर्व है कि आज भी नारी ने नारी जाति ने अपने उस स्वरूप को सुरक्षित रखा है। सेवा और साधना का वह रूप आज भी उसमें परिलक्षित हो रहा है। हम थोड़ा गहराई में उतर करके देखें। नारी जीवन में सेवा किस रूप में और साधना किस रूप में नारी को, यदि हम केवल एक घर गृहLFkh संभालने वाली स्त्री के रूप में देखते हैं तो हमें उसका एक अलग रूप दिखता है। लेकिन नारी के समग्र व्यक्तित्व को सामने रखकर देखते हैं तो घर परिवार से लेकर समाज व्यवहार तक उसकी सेवा दिखती है। नारी बच्चे को जन्म देती है। मां कहलाती है और वह मां पेट से ही अपने बच्चे की सेवा में निरत रहती है। और उस घड़ी में वह कोरी सेवा नहीं करती, अपितु अपने बच्चे के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए उसके प्राणों को संरक्षित रखने के लिए अपने सुखों का भी परित्याग करती है। यह उसकी साधना का रूप दिखाई पड़ता है। उसके उपरांत यह यही नहीं रुकती। नौ माह तक पेट में सेवा और साधना के साथ गर्भस्थ शिशु का लालन-पालन करते हुए प्रसव के क्षणों में प्रसूति की तीव्र वेदना को सहनशीलता से सहती है। यह उसकी साधना का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। एक संतान को जन्म देना भी नारी की सेवा और साधना का जीवंत रूप है और यही उसकी यात्रा नहीं रुकती। संतान को जन्म देने के बाद उसका ठीक रीति से लालनपालन करना। उसे अच्छे संस्कार देना। उसके जीवन को गढ़ना और उसके लिए अपना सर्वस्व अर्पित करना नारी की सेवा ही नहीं एक प्रकार की तपस्या बन जाती है। जब वह खुद गीले में रहकर अपने बच्चे को सूखे में सुलाती है। ये उसकी साधना है। इसकी साधना यहीं नहीं रुकती। अपनी संतान को बड़ी करने के लिए वह अपना एक एक पल समर्पित करती है। उसके लिए अपना श्रम U;kSSछावर करती है। उसके भरण पोषण का परिपूर्ण ध्यान रखती है। और अपने ममत्व के सिंचन से संतान का भावी भविष्य गढ़ती है। यह उसके सेवा का चरम रूप है। नारी के इस रूप के साथ हमें वो अपनी संतान का जीवन तो गढ़ती ही है। घर परिवार में धर्म साधन भी करती है। त्याग, तपस्या भी करती है। व्रत, उपवास भी करती है। यह नारी का रूप दिखता है। अगर हम देखें तो ऊपरी तौर पर नारी के चार रूप हमारे सामने हैं। एक मां का रूप। एक पत्नी का रूप और एक बेटी या बहन का रूप और एक त्यागी ozती साध्वी vkf;Zdk का रूप। ये चारों रूपों में सेवा और साधना जीवंत दिखती है। नारी के मां के रूप को तो मैंने आप सबके समक्ष रखा ही। संतान के संपूर्ण भविष्य का निर्माण एक मां के ऊपर निर्भर करता है। कहा जाता है कि मां के आंचल के सलवटों में संतान का भाग्य लिखा होता है और मां वह सब कुछ कर पाती है अपनी निष्ठा पूर्ण त्याग, तप सेवा और समर्पण के बल पर जब हम उसके दूसरे रूप को देखते हैं, पत्नी के रूप को, तो एक नारी पत्नी के रूप में भी इन दोनों का उत्कृष्ट उदाहरण बन जाती है। पति - पत्नी का संबंध कोई भौतिक संबंध नहीं है। या केवल यौन laca/kks तक सीमित संबंध नहीं है। पति पत्नी का संबंध प्रगाढ़ भावनात्मक

संबंध है जो उसके त्याग, समर्पण, श्रद्धा और निष्ठा से परिपुष्ट होता है। ,slh पत्नियां हमारे समाज की अनेक नारियां हुई। चाहे वह सीता जैसी हो, चाहे वह चेलना जैसी हो, चाहे वह अनुसूया जैसी हो, चाहे वह सोमा सती जैसी हो। ये सब पत्नियां थी। पर इन्होंने अपने सेवा और तप के बल पर उत्कृष्ट प्रतिमान स्थापित किए और उसका यह परिणाम है कि आज हमारे देश में नर से पहले नारी का नाम लिया जाता है। सीता पहले है राम बाद में, राधा पहले श्याम बाद में, मां पहले पिता बाद में। ये क्यों? ये सब केवल नारी की श्रद्धा, सेवा और साधना की याद में है। अगर वह बहन और बेटी के रूप में देखते हैं तो बहन और बेटी में भी सेवा का भाव हमेशा दिखता है। घर में बहन अपना स्नेह U;kSSछावर करती है। ख्याल रखती है। बेटियां भी इसका ख्याल रखती है। चाहे छोटे बच्चों का हो या घर के बड़ेबुजुर्गों का मां का कामों में भी हाथ cVk¡uk] उसकी परम रुचि रहती है इन कार्यों में और वह उसका योगदान देती है और वही नारी जब तत्व ज्ञान से संपन्न होकर साधना के मार्ग में अग्रसर होती है। व्रत संयम को अंगीकार करती है। त्याग और तपस्या का रास्ता अंगीकार करती है। तब उसके अंदर से कोई त्यागी o`rh साध्वी या vkf;Zdk का रूप प्रकट हो जाता है। जो साधना की प्रतिमूर्ति तो होती ही है। अपने तत्व उपदेश और दिशा दृष्टि से पूरे समाज के उत्थान का रास्ता बताती है। और एक प्रकार की समाज सेवा भी करती है। इन्हीं सब कारणों से नारी शक्ति को इतना सम्मान मिला। आज भी पुरुषों की तुलना में व्रत उपवास करके साधना djus वालों में पुरुषों की तुलना में नारियों की संख्या ज्यादा है। है ना? हो सकता है आज इस सभा में भी कोई उपवासी मां बैठी हो, बहन बैठी हो, बेटी बैठी हो। ये क्या है? साधना के प्रति तुम्हारे सहज झुकाव का उत्कृष्ट उदाहरण है। लेकिन आज के संदर्भ में जब हम विचार करते हैं तो हमें कई बातें ऐसी दिखती है जिस पर हमें बहुत गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। धर्म सभाओं में जब नारी जाति की आलोचना की जाती है। स्वाभाविक है सबको चुभती है। अगर उनकी सराहना की जाती है आप सब izeqfnr होते हैं। लेकिन मैं चाहता हूं आज ना तो आलोचना हो या ना सराहना। मैं आपके बीच ना तो आपकी आलोचना djus के लिए आया हूं और ना ही आपकी सराहना के लिए। मैं यहां उपस्थित हूं केवल सही दिशा दर्शन देने के लिए। आज यहां बैठी सभी मां बहनों को बेटियों को थम करके विचार करने की जरूरत है। मैं क्या हूं और मुझे क्या होना चाहिए। नारी जाति का जो गौरव और गरिमा है क्या मैं आज उसे सुरक्षित रख पा रही हूं या वो कहीं खंडित हो रही है यदि कहीं से खंडित हो रही है तो हमें उस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। आज एक अभियान चल पड़ा है। **नारी सशक्तिकरण** क्या है? नारी सशक्तिकरण अच्छी बात है। नारी सशक्त हो इसमें कोई बुराई नहीं। होना चाहिए। हमें उससे कोई तकलीफ नहीं है। नारी समर्थ बने, नारी सशक्त बने। लेकिन सशक्तिकरण के नाम पर होने वालेभटकाव के प्रति हमारा ध्यान जाना चाहिए। आज कहने को सशक्तिकरण की बातें हैं। पर आप देख रहे हैं किस कदर भटकाव हो रहा है। आपने कभी विचार किया? सशक्तिकरण के नाम पर क्या भटकाव है? नारी का समर्थ होना यानी उसके ukjhRo ds गुणों और कर्तव्यों में और निखार आना। उसके हृदय में जो सहज ममता /k`fr क्षमा सहनशीलता करुणा जैसे उदाÙk गुण है उनका विकास होना Js"B गुणों से उसका मंडित होना सच्चे अर्थों में नारी के सशक्त होने का अर्थ तो यही है। यदि साधारण शब्दों में मैं कहूं तो नारीत्व की पुष्टि ही नारी का l'kDrhdj.k है। लेकिन आज l'kDrhdj.k के नाम पर समाज की समग्र नारी जाति को ठगा जा रहा है और उसका सर्वस्व लूटा जा रहा है। उसे पता नहीं चल रहा है कि वो कहां ठगी जा रही है, कहां वंचित हो रही है, कहां पीछे जा रही है। नारी का पढ़ लिख कर के आगे बढ़ना, अपने पैरों पर खड़ा होना कतई बुरा नहीं है। लेकिन l'kDrhdj.k के नाम पर अपने आप को पुरुष बनाने की होड़ में लग जाना कतई अच्छा नहीं है। आप किसको मानते हैं l'kDrhdj.k ? पुरुषों के समान वाणी में कठोरता लाना। पहनाव में उन्मुक्तता रखना। और व्यवहार में तीखापन लाना यही है आपका l'kDrhdj.k क्या है ? ये क्या है इसका कुपरिणाम क्या है ? तुम्हारे अंदर जो प्राकृतिक गुण है वह खंडित हो रहे हैं और जो नहीं है वह प्रकट हो रहे हो नहीं सकते हमेशा एक बात ध्यान रखना हमारी श्रेष्ठता किसी की नकल करने से नहीं खुद की प्रगति करने से बढ़ेगी। आप लोग पुरुष होना क्यों चाहती? पुरुषों की बराबरी क्यों चाहती? पुरुषों जैसा जीवन क्यों चाहती क्यों? क्या अपने आप में कहीं कमी है ? कहा जाता है या देवी सर्व Hkwrs"kq शक्ति :is.k lafLFkrk ऐसा कहते हैं आप नारी शक्ति को तो एक अलग शक्ति के रूप में प्रचंड शक्ति के रूप में मान्य किया गया है वह अपने आप में पर्याप्त है। मुझे लगता है कि आज पश्चिमी सोच के हावी होने के कारण आप लोगों के मन में अपने अंदर कहीं ना कहीं हीनता का भाव है। मैं स्त्री हूं इसलिए पीछे। जबकि सच्चाई यह है कि पुरुषों को आगे बढ़ाने का काम हमेशा स्त्रियों ने किया है। कालिदास को महाकवि कालिदास, सरस्वती ने बनाया और तुलसीदास को गोस्वामी तुलसीदास रत्नावली ने बनाया। नारी कम कहां है? नारी कहीं से कम नहीं। वो तो नारायण की जननी है। यह श्रेय तुम्हारे लिए प्राप्त हुआ। उसे तो पहचानो। तुम्हें पुरुष बनने की जरूरत क्या है? नकल करने की जरूरत क्या है? अपनी मौलिकता को पहचानो। अपने मौलिक स्वरूप को आत्मसात करके चलो। जिससे जीवन बेहतर बन सके। शील, संयम, मर्यादा और सदाचार में ही ukjhRo की सुरक्षा है। पढ़ाई लिखाई करना बुरा नहीं। आत्मनिर्भर होना कोई बुरा नहीं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना भी समय के अनुसार स्वीकार्य हो सकता है। लेकिन इस **आत्मनिर्भरता के नाम पर मर्यादाहीन आजादी कतई स्वीकार करने योग्य नहीं होनी चाहिए।** विडंबना है कि आधुनिकता के नाम पर आज यही सब कुछ होने जा रहा है। हो रहा है, मेरा आप सभी से यही कहना है कि इसके प्रति गंभीर बने। आज की इस सभा में एक प्रण ले कि मेरा जो असली स्वरूप है सेवा और साधना का मैं उसे अपने जीवन के अंतिम सांस तक जीवंत रखूंगी। वर्तमान युग में बहुत कुछ बदलाव भी आया है और बहुत कुछ भटकाव भी आया है। बदलाव क्या आया है और भटकाव कहां है? थोड़ी सी उसकी चर्चा करें। हमारे शास्त्रों में एक नारी के पांच रूप बताए हैं। नारी के पांच रूप पहला **कन्या** का रूप। दूसरा **पत्नी** का रूप। तीसरा **जननी**

या मां का रूप। चौथा **भार्या** का रूप और पांचवा **कुटुंबिनी** का रूप। कन्या से लेकर कुटुंबिनी तक नारी के पांच रूप रहे हैं। और नारी जाति ने सदैव पांचों रूपों में खरा उतर कर हमारी समाज और संस्कृति का गौरव बढ़ाया है। उसे गरिमा मंडित किया। पांचों रूपों में सबसे पहला रूप है कन्या का रूप। कन्या को मंगल बोला जाता है। यह सौभाग्य कन्याओं को मिला है। लड़कों को नहीं मिला। बोलो मंगल में सचिÙk मंगल के रूप में कन्या को परिगणित किया। लड़कों को नहीं। आज भी कुछ परंपराओं में कन्या भोज की परिपाटी है। कहीं पुत्र भोज नहीं होता। सोचो ? यह क्यों? कन्या के लिए एक दूसरा शब्द है **दुहिता**। जो दो परिवार का हित साधती है वह है दुहिता। वह है कन्या। जो अपने पिता के घर का भी और अपने पति के घर का भी। कन्या को देहरी पर रखे गए दीप की तरह माना गया है जो बाहर भी उजाला देती है और भीतर भी प्रकाश फैलाती है। यह है कन्या। उस कन्या को संस्कार और मर्यादा से युक्त होना चाहिए। ज्ञान विज्ञान में कुशलता के साथ संस्कारों और मर्यादाओं से बंधा होना चाहिए। हमारे यहां चाहे पुत्र हो या कन्या सभी को कला और गुणों में निपुण होने की बात की गई और यदि हम अपने सांस्कृतिक इतिहास को पलट कर देखते हैं तो पाते हैं कि हमारे तीर्थंकर ऋषभदेव ने अपनी बेटियों को पहले पढ़ाया बेटों को बाद में बोलो अक्षर और अंक विद्या किसको दिया? ब्राह्मी और सुंदरी को। हम तो मुग्ध हो गए प्रसंग पढ़कर कि भरत चक्रवर्ती को तो नृत्य विद्या और शस्त्र विद्या की बात की। क्यों? इस संदर्भ में आचार्य जिनसेन ने लिखा है गुणवान नारी vH;qदयकारी और उसके संस्कारों का बीजारोपण तब होता है जब वो कन्या होती है। कन्या एक कोमल कली की भांति होती है। यदि उसे सही संस्कारों से सिंचित किया जाए तो वह पूरे कुल का गौरव महिमा मंडित करती है और पूरे समाज का मान बढ़ाती है। संस्कृति की सेविका बनती है। कन्या के अंदर ये चीजें होनी चाहिए। हमारे प्राचीन आदर्शों में एक से एक ऐसी कन्याओं के रूप मिलते हैं। वर्तमान में हम सूचना और टेक्नोलॉजी के युग में जी रहे हैं। हमारे पास ज्यादा अच्छे साधन हैं और आज की कन्याएं पहले की अपेक्षा ज्यादा पढ़ लिख गई है और आर्थिक रूप से भी बहुत अंशों में आत्मनिर्भर बन रही है। यह एक बदलाव है जो स्वागत योग्य है। लेकिन एक भटकाव भी देखने को मिलता है। वह यह है कि आज की कन्याएं पूरी तरह से **उच्छृंखल और** नियंत्रण विहीन और अशोभन कार्यों में जुट गई। शील, संयम और सदाचार की भावनाएं अब विलुप्त होने लगी है। और यह गर्लफ्रेंड और बॉयफ्रेंड का ट्रेंड पता नहीं क्या कर रहा है? यह विचार करने योग्य है। यह बहुत बड़ा भटकाव है। पहले हमारी कन्याएं संस्कारों से मंडित होती थी। आज की कन्या सोशल मीडिया, Facebook, Instagram में ट्रेंड कर रही है। चैट में मगन है। है ना? पहले कन्याएं मां के काम में हाथ बटाती थी। आज की बेटियों को मोबाइल से फुर्सत नहीं है। बोलो है ना ये भटकाओ।

घर घर की कहानी है। यहां बैठी जितनी भी 40-45 को पार किए हुए बहने हैं वे सब ऐसी ही बहनें होंगी जिन्होंने अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में ही सेवा और संस्कार से अपने आप को मंडित किया होगा। अपने छोटे भाइयों या परिवार के बड़े सदस्यों की सेवा उन्होंने बचपन में की होगी और पांचवी – छठवी क्लास से मां के साथ रसोई में जाकर काम हाथ खाना बनाने में या घर का काम निपटाने में हाथ बटाती होगी। है ना? बोलो मैं गलत कह रहा हूं। सब 45-50 साल की उम्र वाली जो पीढ़ी है उसके अंदर संस्कार होंगे। लेकिन आज की कन्याएं रोटी बनाना तक नहीं जानती। कहां से सेवा का भाव आएगा और कहां से संस्कार आएंगे। पहले संस्कार की बात थी। अब संस्कार की जगह स्क्रीन ने ले ली। यह एक बहुत बड़ा भटकाव है। क्या है? यह भटकाव। एक बेटी एक बेटी गुरु के पास पहुंची। गुरु ने पूछा क्या करती हो? बोले पढ़ाई करती। बोले पढ़ाई के बाद क्या करती हो?

बोले कुछ नहीं। आजकल हम सोशल मीडिया में एक्टिव रहते हैं और रील्स बनाते हैं। क्या बनाते हैं? ये सब चीजें क्या है? जो हमें दूसरों से तो कनेक्ट कर रहा है और खुद से तोड़ रहा है। अपनों से दूर कर रहा है। यह आखिर हमें कहां ले जाएगा? इसकी तरफ हमें ध्यान देना नितांत आवश्यक है। दूसरा है **पत्नी**। पत्नी का रूप बड़ा उत्कृष्ट रूप रहा। पत्नी वह जो अपने पति के पराय.k बनकर अपनी सेवा और सद्भावना से उसे उसके हर कार्य में सहयोगिनी और सहगामिनी बनती सहचरी बनकर के जीती और उसके दुख की घड़ी में भी उसे सही रास्ता बताती, सही मार्ग दिखाती और एक तरह से हर कदम से कदम मिलाकर के चलती थी। आजकल समय बदल गया। अब उसका स्थान क्या हो गया? हम क्यों झुके? पहले कर्तव्य की बात आती थी। अब उसका स्थान अधिकार ने ले लिया। कर्तव्य में सेवा थी। अधिकार में अहंकार आ गया जो घर परिवार को लील रहा है। इसका यह कुiरिणाम है। कि आए दिन कौन वो राजा रघुवंशी जैसी दुर्घटनाएं खौफनाक घटनाएं घटती है राजा रघुवंशी और उस महिला का नाम क्या था सोनम अखबार में पढ़ता नहीं, आप लोगों से सुन के बता रहा हूं यह घटनाएं आए दिन क्यों हो रही है संस्कारों की कमी के कारण पत्नी जो सहचरी होनी चाहिए अब वो प्रतिद्वंदी बन गई है। यह भटकाव है। आज की बेटियाँ आज की पत्नियां पढ़ लिख गई। कामकाजी बन गई। घर के अलावा बाहर का काम भी करने में समर्थ हो गई। यह एक बदलाव है जो स्वागत योग्य है। लेकिन दूसरी तरफ काn जो भटकाव है जिसके कारण आए दिन तलाक और आत्महत्या जैसी घटनाएं प्रकाश में आती है। वह पूरी समाज के लिए बहुत गंभीरता से विचारणीय है। बहनों मेरी बात सुन रहे हो आप लोग? थोड़ी सी शांति रख लो। हमने सुना एक ने पूछा कि सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? तो एक ने कहा तीन महिलाएं एक कमरे में तीन घंटे तक बंद थी और तीनों की तीनों मौन थी। समझ गए ना? तो कम से कम शांति रखें और

जो विषय मैं आप सबके लिए दे रहा हूं इसे गंभीरता से समझने की कोशिश करें।

यह कार्यक्रम नहीं क्रांति है जो पूरे समाज में बदलाव का संदेश दे सकती है।

आज इसकी बहुत ज्यादा जरूरत है। बदलाव तो स्वीकार है पर भटकाव कभी स्वीकार नहीं होना चाहिए।

दुर्भाग्य है कि आज बदलाव का स्थान भटकाव ने ले लिया। तीसरा स्थान है

जननी। जननी यानी मां जो अपने संतान का समग्र जीवन गढ़ती। पहले मां अपने बच्चे के खातिर अपने सर्व सुखों का त्याग करती थी। और अपने मातृत्व से संतान को सींच-सींच कर उसका भावी जीवन सुनिश्चित करती थी। आज मांओं में परिवर्तन आया। आज की मां पढ़ लिखकर आगे बढ़ गई। और आगे बढ़ने से बहुत अच्छे काम भी कर रही है। नौकरी पेशा है, कामकाजी है। यह अच्छी बात है। यह बदलाव है। पहले की अपेक्षा सुशिक्षित होना। स्वागत योग्य बात है। लेकिन एक भटकाव दिखता है। वह यह है कि आज की माताओं को अपने ही बच्चों के लिए समय नहीं है। उनके बच्चे अब मोबाइल से पलने लगे। गलत बोल रहा हूं मैं। दूध पीते बच्चे को मोबाइल पकड़ा दो। है ना? मां-बाप का शेड्यूल इतना बिजी है, कि बच्चों को कहीं ना कहीं लगा देते हैं। एक ने बच्चे को मोबाइल पकड़ा दिया। बोले महाराज जी वो बिजी हो जाए इसलिए मोबाइल पकड़ा दिया। हम बोले बच्चे को इतना बिजी क्यों करते हैं? बोले महाराज बच्चे बिजी होते तो हम लोग इजी हो जाते।

बच्चे बिजी तो हम इजी यह भटकाव।

इससे बहुत सारी चीजें हाथ से निकल कर के जा रही है। चीजें खो रही है। इस पर हमें ध्यान देना है। इसके बाद यह एक मां है। मां का मातृत्व दिखना चाहिए। बच्चों को केवल बच्चों का भरण पोषण ही नहीं बच्चों पर संस्काsरापण भी होना चाहिए। और यह केवल एक मां कर सकती है और कोई नहीं। और वही मां कर सकती है जिसके पास अपने बच्चों के लिए समय हो, स्नेह हो, सद्भाव हो। यह बदलाव चाहिए। लेकिन जैसा मैंने कहा मां जो मातृत्व की मूर्ति थी, अब वो मैनेजमेंट में उलझ गई। मां बदलकर मैनेजमेंट से जुड़ गई। चलिए जुड़ गई। ये बदलाव ये भटकाव है। एक स्त्री का चौथा रूप है भार्या।

भार्या बहुत उत्तम रूप है। भार्या का मतलब है जो पूरे परिवार का भरण पोषण करते हुए परिवार को धर्म पथ में लगाए रखे। जिसके कारण घर परिवार में सारी धार्मिक क्रियाएं संचालित होते रहे। दान धर्म का काम होता रहे। व्रत उपवास होता रहे। त्यागी तपस्वियों साधु सन्यासियों का सत्कार होता रहे। वो भार्या थी। आज के समय में हमारी भार्याओं में बदलाव आया। आज हमारी समाज की महिलाएं बड़े-बड़े एनजीओ चलाने में समर्थ हो गई। बड़े-बड़े संगठनों का संचालन कर रही है। यह बहुत अच्छी बात है। उनकी उपलब्धि है। यह बदलाव स्वागत के योग्य है। पर एक बहुत बड़ा भटकाव है। एक बहुत बड़ा भटकाव है। कि आज की महिलाएं हमारे धर्म के कार्यों को गौण करना शुरू कर दी। अब तो दूसरों का भरण पोषण जाने दो। अब तो आपका खाना भी फूड ऐप पर आने लगा है। बोलो है ना? पूरी तरह लाइफ स्टाइल में बदलाव है। डिजिटल होते जा रही है। जो गंभीर है, विचारणीय है, चुनौतीपूर्ण है। हमें इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। अंतिम रूप है **कुटुंबिनी**। हमारे देश में एक स्त्री को कुटुंबनी की संज्ञा दी। यानी घर की प्रमqखा पूरे संयुक्त परिवार विशाल परिवार पूरा परिवार नहीं कुटुंब कुटुंब की बागडोर घर की प्रमुखा के हाथ में होती थी। आज तो कुटुंब ही खत्म हो गए। अब तो परिवार खत्म, संयुक्त परिवार खत्म एकल परिवार की अवधारणा बढ़ गई और परिवार की बात करें तो मैं मेरा पति और मेरे बच्चे इसके अलावा और कोई मतलब नहीं सास ससुर को कहते हैं ये पति के माता-पिता हैं। यह अवधारणाm हमारे जो प्रेम परस्परता, सह अस्तित्व बंधुत्व जैसे उदाÙk जीवन मूल्य हैं उनको खंडित करने लगी है। इसे वापस जगाना चाहिए। उनके अंदर यह मेरा और तेरा का जो अभाव आने लगा है। अब तो पति पत्नी में भी यह मेरा तेरा हो गया। सबके अपने पर्सनल अकाउंट होने लगे हैं। और एक दूसरे के प्रति छिपाव आना शुरू हो गया है। यही भटकाव का कारण है। यह भटकाव हमारे घर, परिवार, समाज सबको तहस-नहस कर रहा है। ये एक छोटा सा संकल्प है। कुल पांच संकल्प आपको लेना है। और यह पांचों संकल्प जिनको यह संकल्प पत्र नहीं मिला उन्हें उपलब्ध करा दिया जाए और यह घर ले जाकर रखें अपने नाम के साथ कि आज हमने चातुर्मास के क्रम में महिला धर्म सभा में यह संकल्प लिया एक ऐसा संकल्प जो मेरे घर परिवार में धर्म की ज्योति जलाने वाला। पहली बात -

1. मैं प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट धर्म के लिए निकालूंगी। दिक्कत है? बोलिए उससे ज्यादा आप लोग निकालते हैं।
2. मैं घर में धर्म का वातावरण बनाऊंगी और परिजनों को प्रेरित करूंगी।
3. मैं घर में धर्म का वातावरण बनाऊंगी और परिजनों को प्रेरित करूंगी।
4. मैं भावना योग के चारों चरणों प्रार्थना प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान व सामायिक का अभ्यास यथासंभव नियमित रूप से करूंगी।

करेंगे आप हाथ उठा दीजिए। बहुत सुंदरA

मैं क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, मोह, असयम आदि को पहचान कर उन्हें कम करने का प्रयास करूंगा। खत्म तो नहीं होगा मुझे पता है पर कम तो हो सकता है ना और आपका पांचवा मैं हर दिन एक सद्भावना का विचार अपने मन में घटित करूंगी और कम से कम एक शुभ कार्य अवश्य करूंगी यह भाव अपने मन में जगाइए जो जीवन के बदलाव का आधार बनेगा अब थोड़ा स्थिर हो जाए और भावना योग के लिए आप तैयार हो जाए बहुत छोटा सा भावना योग हे प्रभु प्रभु मेरे हृदय में मेरे हृदय में ऐसी श्रद्धा जगा दो कि मेरा जीवन धर्ममय बना रहे मुझ में उसमें सच्ची श्रद्धा हो सद्भावना हो, प्रेम और दया का भाव होA मैं शील, संयम, सदाचार और मर्यादा युक्त जीवन जी सकूं और हे प्रभु मुझ में इतना विवेक जगा दो, कि मैं आधुनिकता के साथ मौलिकता को सुरक्षित रख सकूं। हे प्रभु मैं अपने बीते दिन की सभी गलतियों को स्वीकार करती हूं। मैं अपने द्वारा किए जाने वाले गलतियों की निंदा करती हूं। उनके प्रति पश्चाताप करती हूं। मैं सभी से क्षमा याचना कर। सभी को क्षमा करती हूं। सभी से क्षमा। मैं दूसरों पर दोषारोपण की बजाय खुद की गलतियों को स्वीकार करूंगी। मैं संयम, सदाचार और शील का पालन करूंगी। हे प्रभु मुझ में मर्यादा हो। मुझ में संयम हो, मुझ में सकारात्मकता हो, मेरा जीवन धर्ममय बने, मैं सहज रहूं, मैं शांत रहूं, मैं संयम रखूं, मुझ में सकारात्मकता होA

सोहम्। सोहम्। सोहम्।

"मैं नालंदा हूँ...! जिनवाणी की पावन भूमि...!"

एक ऐसी कहानी जिसे जानकर मन कांप उठेगा, और गर्व से सिर ऊँचा हो जाएगा... वह भूमि जहाँ कभी भगवान महावीर की वाणी गूंजती थी, जहाँ जिनशासन की आराधना होती थी, और जहाँ ज्ञान, संयम और मोक्षमार्ग का दीप जलता था।"

☐ यहाँ सिर्फ पढ़ाई नहीं होती थी, यहाँ आत्मा की शुद्धि सिखाई जाती थी, पांडित्य नहीं, परमात्मा तक पहुँचने की साधना कराई जाती थी।

☐ **नालन्दा के आँचल में क्या-क्या था?**

☑ 10,000 विद्यार्थी

☑ 1,500+ जैनाचार्य

☑ 108 विषय – आगम, व्याकरण, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, ध्यान, दर्शन

☑ 3 नौमंज़िला लाइब्रेरी – रत्नसागर ☐, रत्नादधि ☐, रत्नरंजक ☐

☑ मोक्षमार्ग की सीढ़ियाँ हर कक्षा में...

☐ जिनवाणी की गूंज, नमोकार मंत्र की ध्वनि, और जिनेंद्र भगवान के समक्ष नत विद्यार्थी – यही मेरी पहचान थी।

☐ फिर आया वो अंधेरा...

एक अत्याचारी – बख्तियार खिलजी, जिसे जिनशासन की शांति से चिढ़ थी, जिसने देखा कि एक जैनाचार्य पंडित राहुल श्रीबद्रजी ने उसकी जान बचा ली... परंतु वह यह सह नहीं पाया कि जिनवाणी की शक्ति उसके जीवन की रक्षा कर सकती

है।

☐ उसने बदले की आग में, मुझे और मेरे हर पत्थर को जला दिया।
मेरे शिष्यों को तलवारों से काट डाला, मेरे आचार्यों को जिनप्रेम का दंड मिला।

☐ और फिर... मेरी रत्नत्रयी लाइब्रेरी में आग लगा दी गई,
छह महीने तक जलता रहा मैं...

☐ हाँ, पूरे छह महीने...!
क्योंकि वो पांडुलिपियाँ कागज़ की नहीं, ताम्रपत्रों और पत्तों पर लिखी थीं,
जो धीरे-धीरे जलती रहीं, और यह क्षेत्र हर दिन बिलखता रहा।

☐ आज की पीढ़ी को क्या पता…
कि मैंने जिनशासन के इतिहास को अपने कलेजे में सहेज रखा था।वो सब जल गया...! ☐

☐ **मेरे निर्माता**

1 कुमारगुप्त – जिन्होंने मेरी नींव रखी (5वीं सदी)
2 हर्षवर्धन – जिन्होंने मुझे विस्तार दिया
3 देवपाल – जिन्होंने मेरे तीर्थरूप को ऊँचाई दी

☐ मुझसे जुड़ी हर ईंट, हर चौखट पर जैन संस्कृति की छाप थी।
प्रत्येक छात्र आचरण, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का पालन करता था।
मेरे यहाँ प्रवेश परीक्षा तीन चरणों की होती थी – सिर्फ 10 में से 3 ही चुनिंदा विद्यार्थी स्वीकारे जाते थे।

☐ जिनशासन की ध्वनि में एक बार फिर जान भरिए!
मुझे फिर से जिंदा करना है, जिनवाणी की लौ को फिर से प्रज्वलित करना है।

☐☐ क्या आप तैयार हैं मेरे इतिहास को संजोने के लिए?

☐ **अगर आना चाहो तो ध्यान रखना:**

✈ एयरपोर्ट – पटना (89 किमी)
☐ स्टेशन – राजगीर (प्रमुख), नालंदा
☐ सड़क – गया, राजगीर, बोधगया से सुगम मार्ग

- सुलभ जैन (बाह)

भद्दलपुर विजिट रिपोर्ट

दसवें तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री शीतलनाथ भगवान की जन्मभूमि भद्दलपुर जो अनेक नामों से प्रसिद्ध है जैसे भद्रिकापुरी, भद्दलपुर, भद्रपुर आदि। हरिवंश पुराण और महापुराण आदि में भी इस तीर्थ का वर्णन आता है जहां शीतलनाथ भगवान के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान चार कल्याणक इस पुण्य धरा पर हुए। इस पावन वसुंधरा पर नेमिनाथ भगवान के समवशरण की रचना भी देवों ने की थी, भगवान महावीर के चरण भी इस धरती पर पढ़े थें। ऐसी पवित्र पावन भूमि पर स्थित प्राचीन जैन मन्दिर के नवनिर्माण में जीर्णोद्धार का कार्य तीव्रगति से चल रहा है।

क्षेत्र पर अनेकों योजनाओं का कार्य लंबित है, इन्हीं निर्माणाधीन कार्यों का अवलोकन करने भारतवर्शीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राश्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद, श्री जवाहर लाल जैन शतकोत्तर रजत स्थापना वर्श समिति के चैयरमैन, श्री सुरेश जैन झांझरी, कोडरमा, श्री शम्भू जैन सरावगी, गिरिडीह

आदि के साथ भद्दलपुर पहुंचे तथा चल रहे कार्यों से संतुश्ट हुए।

श्री क्षेत्र पर आगामी 26 नवम्बर 2025 से 30 नवम्बर 2025 तक आचार्य श्री भदबाहु सागर जी के सान्निध्य तथा आर्यिका गणिनी ज्ञानमती माताजी की पावन प्ररेणा से होगा। क्षेत्र पर चल रहे निर्माण में 30ग70 फीट 2100 वर्ग फुट की एक विशाल भोजनशाला के निर्माण में व्यय होने वाली कुल लागत से 20 लाख रूपए की राशि भारतवर्शीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा अनुदान देने की स्वीकृति प्रदान की गई है।

भद्दलपुर कमेटी के महामंत्री श्री सुरेश जैन झांझरी ने भोजनशाला के लिए दिए जाने वाली अनुदान राशि को शीघ्र अतिशीघ्र दिए जाने का भी अनुरोध किया ताकि निर्माण कार्य को उचित गति प्रदान की जा सकें।

तत्पश्चात् कार्य को निंवाद्ध रूप से गति प्रदान हो तथा पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन के तथा प्राकृतिक सपंदा को सुरक्षित बनाए रखने के लिए एवं कार्य को गति प्रदान हो इसी शुभ भावना के साथ वृक्षारोपण भी किया गया।

सम्मेदशिखरजी में बहुउद्देशीय भवन का शुभ मंगल शिलान्यास

शिखरजी– विश्ववंदनीय शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी में विराजमान समस्त आचार्य–मुनि आर्यिकादि चतुर्विध संघ के मंगल आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के १२५ वॉ स्थापना वर्ष के अवसर पर दिनॉक ३० जुलाई २०२५ को ''बहुउद्देशीय भवन'' का भूमिपूजन (शिलान्यास) समारोह अति उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम से दो दिन पूर्व ही श्री सम्मेदशिखरजी में विराजित सभी साधु संतों के दर्शन वन्दन कर शिलान्यास कार्यक्रम की सफलता हेतु मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

बताते चलें कि झारखण्ड गिरिडीह जिलान्तर्गत शिखरजी मधुबन में यात्री निवास के सामने श्री १००८ शीतलनाथ जिनालय के बाजू में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के १६ डिस्मील भूखण्ड पर एक ''बहुउद्देशीय भवन'' का निर्माण करने की योजना बनाई गई है। जिसके संबंध में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन की प्रशस्त भावनानुरूप स्वर्ण शिलाएँ, रजत शिलाएँ, ताम्र शिलाएँ ऑरिजनल मूल धातु से बनवाकर स्थापित करवाई गई। वीर नि. सं. २५५१ श्रावण शुक्ल शष्ठी बुधवार दिनॉक ३० जुलाई २०२५ को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय यशस्वी अध्यक्ष श्रावक शिरोमणि श्री जम्बू प्रसाद जी जैन गाजियाबाद के कर कमलों से शिलान्यास का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास के इस कार्यक्रम में अनेक श्रावकगण व साधर्मीजन उपस्थित रहे। श्री जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद, श्री कमल सिंह रामपुरिया, कलकत्ता श्री संजय जैन पापड़ीवाल, औरंगाबाद, श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद, श्री आशीश जैन, गाजियाबाद, श्री अशोक जैन दोशी, मुम्बई, श्री हसमुख जैन गांधी, इन्दौर, श्री मनोज जैन, धनबाद, श्री प्रभातचन्द जैन सेठी, गिरिडीह, श्री राजकुमार जैन अजेमरा, हजारीबाग, श्री शम्भू जैन सरावगी, गिरिडीह, श्री एम.एस जैन, मेरठ, श्री अमित जैन, मधुबन, श्री महेन्द्र जैन, रांची, श्री अनिल जैन, दुर्गापुर, श्री योगेश जैन, इन्दौर, श्री देवेन्द्र जैन, मधुबन, श्रीमती इला अशोक दोशी, मुम्बई, श्री कमलेश जैन, आरा, श्री सुरेश जैन सेठी, मुम्बई, श्रीमती अपराजिता जैन, दिल्ली, श्री सुरेश/महेन्द्र जैन, सी.ए., मुम्बई, श्री महावीर जैन, औरगांबाद, श्री बी.एन.चौगुले, मधुबन, प्रियांशी योगेश जैन, इन्दौर, श्री राहुल जैन, मधुबन, श्री जम्बू चौगुले, कोल्हापुर, श्री ओमप्रकाश जैन, कलकत्ता, श्री अंशुल कोठारी, इन्दौर, श्री अमित–महावीर जैन, सांगली, श्री विजय पाटनी, कलकत्ता, श्री दीपक–श्वेता जैन, दिल्ली, श्री नवरत्न जैन, कलकत्ता, श्री लवकुश जैन, कलकत्ता, श्री स्वतंत्र जैन, इन्दौर, श्री सुनील जैन, भोपाल, श्री मनोज जैन, दिल्ली, श्री ऋषभ जैन, खरगोन, श्रीमती गायत्री देवी जैन, पुरलिया, श्रीमती सुजीता–सुनील जैन, देहरादून आदि महानुभावों के द्वारा शिलादान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पं. श्री दीपक जी शास्त्री कृष्णानगर दिल्ली, ने विधिवत मंत्रो के साथ पूजा विधान सम्पन्न कराया। आयोजन में उपस्थित समग्र अतिथियों का यथायोग्य पगड़ी– चन्दन तिलक, वंदन कर स्वागत अभिनंदन किया गया तथा मिठाई प्रसाद का वितरण किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के १२५वॉ स्थापना वर्ष के चेयरमेन श्रीमान जवाहर लाल जी जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्ष २०२७ तक इस बहुउद्देशीय भवन का निर्माण पूर्ण कराने का तथा १२५वें समापन वर्ष के समय इस भवन का लोकापर्ण करने का प्रयास रहेगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा भारत के प्रमुख दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों के विकास के लिए करीब २ करोड़ रूपये का आवंटन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रत्येक ९ अंचलों से प्राप्त अनुशंसानुसार प्रत्येक अंचलों के तीर्थक्षेत्रों के विकास एवं जीर्णोद्धार के लिए २०-२० लाख रुपया का आवंटन किया गया। श्री दिगम्बर जैन सिद्धांत क्षेत्र शिकोहपुर, हरियाणा में संपन्न हुई पदाधिकारि परिषद् की मीटिंग उपस्थित सभी अंचलों के अध्यक्षों की अनुशंसानुसार तीर्थक्षेत्रों की यह अनुदान निम्नप्रकार देना स्वीकृत किया गया।

महाराष्ट्र अंचल –

क्षेत्र / मंदिर का नाम	स्वीकृत
i) तीर्थ रक्षा शिरोमणी आचार्य आचार्य श्री आर्यनंदी जी महाराज की जन्मस्थली, ढोरकीन में निर्माणाधीन श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ता. पैठण, जि. संभाजीनगर के लिए केन्द्रीय कमेटी की ओर से विशेष अनुदान)	५ लाख
ii) श्री १००८ संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनागिरी जटवाड़ा (औरंगाबाद) भोजनशाळा एवं सर्वेंट क्वाटर के निर्माण हेतु	५ लाख
iii) श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा पर निर्माणाधीन छात्रावास में एक विंग के निर्माण हेतु	5 लाख
iv) श्री १००८ चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन प्राचीन अतिशय क्षेत्र कोठाला, जिला जालना, प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु	5 लाख
v) श्री महास्वामी श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ, (प्राचीन) कोल्हापुर	5 लाख
vi) श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कवलाणा, ता.मालेगांव (नाशिक) मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु	2 लाख
vii) श्री सर्व सुखदायक श्री पार्श्वनाथ जैन तीर्थक्षेत्र पार्श्वगिरि ट्रस्ट, नंदुरबार क्षेत्र के विकास हेतु	2 लाख

गुजरात अंचल

i) श्री गिरनार जी क्षेत्र की दूसरी टोंक पर विराजमान मुनि श्री अनिरुद्ध कुमार के विराजमान चरणचिन्हों के चबूतरे के जीर्णोद्धार हेतु	**रु. 10 लाख**

तमिलनाडु अंचल

i)	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन भवन मैनेजमेंट ट्रस्ट, टिंडीवनम	7.5 लाख
ii)	श्री अनन्ता तीर्थंकर जिनालय ट्रस्ट, अर्नी के मंदिर जीर्णोद्धार हेतु	2.50 लाख
iii)	वेल्लूर जिला जैन फाउनडेशन ट्रस्ट, वेल्लूर मंदिर के जीर्णोद्धार एवं यात्री सुविधा हेतु	2 लाख
iv)	श्री १००८ पद्मप्रभ जैन, एसोसिएसन, अर्काट (नए मंदिर के निर्माण के लिए)	2 लाख
v)	श्री अरिहंतगिरि दिगम्बर जैन मैनेजमेंट ट्रस्ट कवरूर	2.5 लाख
vi)	श्री १००८ आदि भगवान दिगंबरा ट्रस्ट, अय्यापक्कम	1 लाख
Vii)	१००८ श्री आदीश्वरा भगवान दिगंबरा जैन जिनालयम	1 लाख
Viii)	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन भवन मैनेजमेंट ट्रस्ट	1.50 लाख

मध्यांचल

तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल द्वारा १० तीर्थक्षेत्रों के गर्भालय व उपर्युक्त स्थान पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सोलर पैनल लगाने की योजना बनाई है इसके लिए प्रत्येक निम्न क्षेत्रों के लिए २-२ लाख रूपये का अनुदान तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से दिया गया।

(i) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेडिया जी
(ii) श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बाबनगजा (चूलगिरी)
(iii) भगवान बाहुवली दिगम्बर जैन ट्रस्ट गोम्मटगिरि, इंदौर
(iv) १००८ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़, गुना
(v) श्री देव पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि, नैनागिरी
(vi) श्री दिगम्बर जैन दर्शनोदय अतिशय क्षेत्र थूबोन जी, अशोकनगर

Annamangalam
Jinalayam
1,00,000/-

Kavanur Jinalayam
Rs 2,50,000/-

Arcot Jinalayam
Rs 2,00,000/-

Arni-saidapet
Jinalayam
Rs 2,50,000/-

Shri Parswanath
Jain Bhavan
1,50,000/-

Vallimalai Jinalayam
Rs 2,00,000/-

(vii) श्री १००८ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा जी, टीकमगढ़

(viii) श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोंणगिरि, छतरपुर

(ix) श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र आहारजी, टीकमगढ़

(x) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वनाथ मक्शी जी, शाजापुर

पूर्वांचल

पूर्वांचल समिति की अनुशंसानुसार श्री १००८ भगवान शीतलनाथ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र भदलपुर, इटखोरी (झारखण्ड) को रूपये २० लाख का अनुदान देना स्वीकृत किया गया।

शेष अंचलों से आवेदन पत्र होने पर पर अनुदान दिया जायेगा।

श्री णमोकार क्षेत्र नासिक अंतराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

अंतराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में तीर्थक्षेत्र कमेटी महामंत्री परिवार को मिला माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री णमोकार क्षेत्र नासिक, में दिनांक 6 फरवरी 2026 से 13 फरवरी 2026 को संपन्न होने जा रहे अंतराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एव महामस्तकाभिषेक महोत्सव में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समिति अध्यक्ष, एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष जी जैन पेंढारी -सौ स्मिता जैन पेंढारी नागपुर को 3000 मूर्तियो के इस भव्य एवं ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव में माता पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । प्रज्ञाश्रमण सरस्वताचार्य श्री देवनंदी जी महाराज ने अपने अवतरण दिवस पर आशिर्वाद प्रदान कर यह घोषणा की है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार आप पुण्यार्जक परिवार के पूण्य की अनुमोदना करता है !

हस्तिनापुर में भूगर्भ से प्राप्त 1008 श्री आदिनाथ भगवान की तीन नेत्रों वाली प्रतिमा

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक
तैयार कर रही है आपका गुडलक

घर-घर
गुल्लक योजना

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्श सागरजी मुनिराज ने ऋषभ विहार दिल्ली में 23 जनवरी को धर्मसभा में कहा भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा गुल्लक योजना चलायी जा रही है। ध्यान रहे, यह गुल्लक योजना आपको आर्थिक सहयोग के साथ-साथ तीर्थों के प्रति भावनात्मक दृष्टि से भी जोड़ने का सरल-सहज उपाय है। हमें चाहिए कि हम अधिक से अधिक संख्या में तीर्थों की वंदना करें। तीर्थों पर स्वयं पहुंचे और गुल्लक योजना के तहत पहुंचायें। तीर्थक्षेत्र कमेटी की यह गुल्लक आपके भाग्य को गुड-लक बनाने के लिये कारगर सिद्ध होगी।

तीर्थों की सुरक्षा के लिये सहयोग करने के लिये आज ही सम्पर्क करें:-

9833671770, 9109228683

M-22

तीर्थों की सुरक्षा के लिये इस QR कोड को स्केन कर दान राशि सीधे अपने मोबाइल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई को भेज सकते हैं।